3.

वृद्धि और विकास
(Growth and Development)

- बाल विकास का सर्वप्रथम अध्ययन – जॉन लॉक व थॉमस होब्स
- बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन – पेस्टालॉजी (1774ई)
- रूसो ने अपनी पुस्तक ''ईमाइल (Emile) में बच्चों की शिक्षा का अध्ययन किया है।
- बाल अध्ययन की शुरूआत –स्टेनले हॉल, न्यूर्याक (अमेरिका), 1893 ई.
- बाल विकास का प्रश्नावली विधि द्वारा सर्वप्रथम अध्ययन करने वाले –स्टेनले हॉल (पत्रिका –पेडो लोजिकल सेमेनरी)
- भारत में बाल अध्ययन की शुरूआत –1930 ई. (ताराबाई मोडेक द्वारा)
- प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना – न्यूयार्क(अमेरीका), 1887
- प्रथम बाल निर्देशन की स्थापना – विलियम हिली, शिकागों में (1909)
- **क्रो एण्ड क्रो –**''बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन जिसमें गर्भाकाल से लेकर किशोरावस्था के प्रारम्भ तक का अध्ययन किया जाता है।''

अभिवृद्धि(Growth)

शरीर तथा उसके अवयवों में होने वाला ''मात्रात्मक'' परिवर्तन।
फ्रेंक – ''कोशिकीय गुणात्मक वृद्धि ही अभिवृद्धि है।''

विकास(Development)

- शरीर तथा मन में होने वाला सभी प्रकार का परिवर्तन। (मात्रात्मक व गुणात्मक)
- वृद्धि+क्षमता+परिपक्वता+वातावरण के साथ अंतःक्रिया है।
- **हरलॉक** –''विकास,अभिवृद्धि तक ही सीमित नही है। इसकी अपेक्षा इसमें परिपक्वास्था के लक्ष्य की ओर, परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास के परिणाम स्वरूप व्यक्ति में नई–नई विशेषताऐं और नई–नई योग्यताऐं प्रकट होती है।
- **हरलॉक –**''विकास व्यक्ति के नवीन विशेषताओ ंव योग्यता को प्रस्फुटित करता है।''
- **हरलॉक –**''परिवर्तनों की प्रगतिशील श्रृंखला जो परिपक्वता व अनुभव के परिणाम स्वरूप होती है। विकास कहलाता है।''
- **गैसेल –**''विकास का अवलोकन, मूल्यांकन कुछ सीमा तक 3 रूपों शरीर रचनात्मक, शरीर क्रिया विज्ञानात्मक व व्यवहारात्मक में मापन किया जाता है।''

- **सोरेन्सन** – ''विकास परिपक्वता व कार्यपरक सुधार की प्रक्रिया जो गुणात्मक परिणात्मक परिवर्तनों के फलस्वरूप होती है।''
- अभिवृद्धि और विकास में अंतर निम्नानुसार है –

अभिवृद्धि(Growth)	विकास (Development)
मात्रात्मक	मात्रात्मक+गुणात्मक
मध्य किशोरावस्था तक (निर्धारित समय)	जीवन पर्यनत
अभिवृद्धि केवल शारीरिक परिवर्तनों को व्यक्त करता है।	विकास एकीकृत होता है। क्योंकि ये सभी पहलुओं को आपस में संबंधित करके चलता है।
संरचना में सुधार से संबंधित	संरचना व कार्य में सुधार करते।
माप का विषय	मूल्यांकन का विषय

FIRST STEP OF SUCCESS

वृद्धि एवं विकास की अवस्थायें
(Stages of Growth and Development)

(क) भारतीय हिन्दू ग्रंथों के अनुसार : विकास की चार अवस्थाएं निर्धारित की गयी हैं। जो निम्नलिखित हैं।–

1. शैशवावस्था (Infancy) : जन्म के 5 वर्ष की आयु तक।
2. बचपनावस्था (Childhood) : 5 वर्ष की आयु से 15 वर्ष की आयु तक।
3. बाल्यावस्था (Boyhood) :10 वर्ष की आयु से 15 वर्ष की आयु तक।
4. प्रौढ़ावस्था (Youth) :15 वर्ष की आयु से उपर।

(ख) हरलॉक ने अपना विस्तृत वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, जो निम्न हैं।

1. गर्भावस्था (Prenatal Stage) :गर्भधारण के दिन से 280 दिन
2. शैशवावस्था (Infancy) :जन्म से 14 दिन तक।
3. बचपनावस्था (Babyhood) :14 दिन से 2 वर्ष की आयु तक।
4. पूर्व बाल्यावस्था (Pre childhood) :2 वर्ष से 6 वर्ष की आयु तक।
5. बाल्यावस्था (Childhood) :2 वर्ष से 11 वर्ष की आयु तक।
6. उत्तर बाल्यावस्था (Post Childhood :6वर्ष से 11 वर्ष की आयु तक।
7. किशोरावस्था (Adolescence) :11वर्ष की आयु से 21 वर्ष की आयु तक।
8. किशोरावस्था को हरलॉक ने तीन भागों में विभाजित किया हैं–
   1.पूर्व किशोरावस्था (Pre Adolescence) :11वर्ष से 13 वर्ष की आयु तक।
   2.आरंभिक किशोरावस्था (Early Adolescence) :13 वर्ष से 17 वर्ष की आयु तक।

SUCCESS COACHING INSTITUTE BUNGARPUR

3.उत्तर किशोरावस्था (Post Adolescence) :17वर्ष से 21 वर्ष की आयु तक।

(ग) डॉ. अरनेस्टजोन्स महोदय द्वारा विकास की प्रतिपादित अवस्थाओं को वर्तमान समय में अध्ययन की दृष्टि से अधिक उपयुक्त माना गया है। इनके अनुसार बालक का विकास चार सुस्पष्ट अवस्थाओं में होता है–

1.शैशवावस्था (Infancy) :जन्म से 5या 6 वर्ष तक।
2.बाल्यावस्था (Childhood) :6वर्ष से 12वर्ष तक।
3.किशोरावस्था (Adolescence) :12वर्ष से 18वर्ष तक।
4.प्रौढ़ावस्था (Adulthood) :18वर्ष की आयु के बाद का समय।

(घ) रॉस ने विकास की चार अवस्थांए बताई हैं–

1.शैशवकाल :1 से 3वर्ष
2.आरम्भिक बाल्यकाल/पूर्व बाल्यावस्था :3से 6वर्ष
3.उत्तर बाल्यकाल :6से 12वर्ष
4.किशोरावस्था :12से 18वर्ष

(ड़)कॉलसनिक के वर्गीकरण के अनुसार विकास की 9 अवस्थांए होती हैं–

1.गर्भाधान से जन्म तक :जन्म पूर्व काल
2.शैशव काल :जन्म से या 3या 4सप्ताह तक
3.आरंभिक शैशव काल :1माह से 15 माह तक
4.उत्तर शैशवकाल :15माह से 30माह तक
5.पूर्व बाल्यकाल :2.5वर्ष से 5वर्ष तक
6.मध्य बाल्यकाल :5वर्ष से 9वर्ष तक
7.उत्तर बाल्यकाल :9वर्ष से 12वर्ष तक
8.किशोरावस्था :12से 15वर्ष तक
9.उत्तर किशोरावस्था :15से 21वर्ष तक

बालक के विकास की सामान्य अवस्थाएं

विकास की अवस्थाए	जीवन अवधि
1.गर्भकाल या गर्भावस्था (Pre_Natal Stage)	गर्भाधान से जन्म तक
2.शिशुकाल और शैशवावस्था (Stage of Infancy)	जन्म से लेकर 3 वर्ष की आयु तक
3.बाल्यकाल या बाल्यावस्था (Childhood Stage)	चौथे वर्ष से लेकर 12 वर्ष तक अथवा बिलकुल निश्चित रूप में वीर्य या रज की उत्पत्ति प्रारम्भ

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

	होने तक चौथे वर्ष से 6वर्ष तक
(1)पूर्व–बाल्यावस्था (pre-childhood stage)	चौथे वर्ष से 6 वर्ष तक
(2)उत्तर–बाल्यावस्था (post-childhood)	7 वें वर्ष से 12 वर्ष तक अथवा बिलकुल निश्चित रूप में या रज की उत्पत्ति प्रारम्भ होने तक
4.किशोरावस्था (Adolescensce)	सामान्यतया 13 से लेकर 19वर्ष तक (निश्चित अर्थो में वीर्य या रज की उत्पत्ति प्रारंभ होने से लेकर परिपक्वता (Maturity) ग्रहण करने तक)
5.प्रौढ़ावस्था (Adolescence)	20वें वर्ष से लेकर या दूसरे शब्दों में परिपक्वता ग्रहण करने के समय में लेकर मृत्यु को प्राप्त होने तक

एक अन्य मत अनुसार बालक के विकास की अवस्थांए निम्न होती है–

1.**शैशवावस्था (Infancy Stage)** एक से 5वर्ष तक

2.**बाल्यावस्था या बाल्याकाल (Early Childhood Stage)** 5से12वर्ष तक

ये तीन अवस्थाओं से होकर जाती है–

–प्रांरभिक बाल्यकाल (Early Childhood Stage) 5से 12वर्ष तक

–मध्य बाल्यावस्था या बाल्यकाल (Middle childhood stage) 7से 10वर्ष तक

–उत्तर बाल्यकाल (Later Childhood stage) :11 से 12 वर्ष तक

3.**किशोरावस्था (Adolescence Stge)** 13से 19वर्ष तक

इन तीन अवस्थाओं में सम्मिलित होती है–

–**प्रारभिक किशोरावस्था (Early Adikescebce Stage)** 13 से 14वर्ष तक

–**मध्य किशोरावस्था (middle Adolescence Stage)** 15से 19वर्ष तक

–**उत्तर किशोरावस्था (Later Adolescence Stage)** 17से 19वर्ष तक

4.**प्रौढ़ावस्था (Adulthood Stage)** 20 से लेकर मृत्यु को प्राप्त होने तक।

कौन बालक किस आयु में वृद्धि और विकास के किस स्तर को स्पर्श करेगा,इसके लिये कोई सार्वभौमिक (Universal) नियम नहीं हैं। अतः वृद्धि और विकास की कोई विशेष अवस्था कितनी आयु और अवधि में मानी जाये इस संदर्भ में काफी–कुछ मतभेद देखने को मिल सकते हैं।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

वृद्धि और विकास के सिद्धांत
(Principles of Growth and Development)

व्यक्ति विशेष में वृद्धि और विकास की प्रक्रिया के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तन कुछ विशेष सिद्धांतों पर ढले हुए प्रतीत होते हैं। इन सिद्धांतों को वृद्धि एवं विकास के सिद्धांत कहा जाता है। ये निम्नलिखित हैं :

1. **निरन्तरता का सिद्धांत (Principle of Continuity)** :यह सिद्धांत बताता है कि विकास एक न रुकने वाली प्रक्रिया है। माँ के गर्भ से ही यह प्रारंभ हो जाती है तथा मृत्यु प्य।नत निरंतर चलती ही रहती है। एक छोटे से नगण्य आकार से अपना जीवन प्रारम्भ करके हम सबके व्यक्तित्व के सभी पक्षों–शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि का सम्पूर्ण विकास इसी निरन्तरता के गुण के कारण भली–भाँति सम्पन्न होता रहता है।

   विकास अवस्थाओं के द्वारा अग्रसर होता है (Development Proceeds by Stages) : बालकों का विकास कुछ अवस्थाओं के द्वारा अग्रसर होता है। ये अवस्थाएं (Stages of Development) कहलाती है। प्रत्येक विकास अवस्था की अपनी कुछ प्रमुख विशेषताएं होती हैं जो उस विकास अवस्था को दूसरो से भिन्न रखती है। इन विकास अवस्थाओं के सम्बन्ध में **फ्रेडमैन ने कहा है** कि, ***"एक विकास अवस्था दूसरी विकास अवस्था से प्रमुख लक्षणों के आधार पर अलग की जाती है। एक अग्रणी विशेषता जो विकास अवस्था को न्याय–संगतता, एकता और अनोखापन प्रदान करती है।"*** जब बालक का विकास प्रतिमाह सामान्य होता है तब एक विकास अवस्था बालक को दूसरी विकास अवस्था के लिए तैयार करती है।

   विकास : परिपक्वता और अधिगम का परिणाम :– बालक का शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार का विकास परिपक्वता और अधिगम का परिणाम माना जाता है। व्यक्ति के वंशानुक्रम से संबंधित शारीरिक गुणों या क्षमता का विकास ही परिपक्वता है। शारीरिक और मानसिक परिपक्वता के कारण भी व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होते है। यह परिवर्तन प्राकृतिक होते है और आयु के बढने के साथ–साथ होते है।

2. **वृद्धि और विकास की गति की दर एक सी नही होती –** वृद्धि और विकास की गति सब अवस्थाओं में एक जैसी नही होती है। शैशवावस्था के शुरू के वर्षों में यह गति कुछ तीव्र होती है, परंतु बाद के वर्षों में यह मंद पड जाती है। पुनः किशोरावस्था के प्रारंभ में गति में तेजी से वृद्धि होती है परंतु यह अधिक समय तक नही बनी रहती। इस प्रकार वृद्धि और विकास की गति में उतार चढाव आते ही रहते है।
3. **वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत :–** इस सिंद्धांत के अनुसार बालकों का विकास और वृद्धि उनकी अपनी वैयक्तिकता (Individuality) के अनुरूप होता है। वे अपनी

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

स्वाभाविक गति से ही वृद्धि और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढते रहते है और इसी कारण उनमें पर्याप्त विभिन्नताऐं देखने को मिलती है। कोई भी एक बालक वृद्धि और विकास की दृष्टि से किसी अन्य बालक के समरूप नही होता है।

4. **विकास क्रम की एकरूपता या समान प्रतिरूप का सिद्धांत :–** विकास की गति एक जैसी न होने तथा पर्याप्त वैयक्तिक अंतर पाए जाने पर भी विकास क्रम में कुछ एकरूपता होती है। इस क्रम में एक ही जाति विशेष के सभी सदस्यों में कुछ एक जैसी विशेषताऐं देखने को मिलती है। जैसे – मनुष्य जाति के सभी बालकों की वृद्धि सिर की ओर से प्रारंभ होती है। इसी प्रकार बालकों के गत्यात्मक और भाषा विकास में भी एक निश्चित प्रतिमान (Pattern) और क्रम को देखा जा सकता है।
5. **विकास सामान्य से विशेष की ओर चलता है** – मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों से सिद्ध किया कि बालक का विकास सामान्य प्रतिक्रियाएं विशिष्ट बनने से पूर्व सामान्य प्रकार की होती है।

   हरलॉक '' विकास की सब अवस्थाओं में बालक की प्रतिक्रियाऐं विशिष्ट बनने से पूर्व सामान्य प्राकर की होती है।''
6. **एकीकरण सिद्धांत** (Principle of Integration):– विकास की प्रक्रिया एकीकरण के सिंद्धांत का पालन करती है। इसके अनुसार बालक अपने संपूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। इसके बाद वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है। उदाहरण – एक बालक पहले पूरे हाथ को, फिर उंगलियों को और फिर हाथ एवं उंगलियों को एक साथ चलाना सीखता है।

   कुप्पुस्वामी ***''विकास में संपूर्ण से अंगों की ओर तथा अंगों से संपूर्ण की ओर गति अंतर्निहित रहती है। विभिन्न अंगों का एकीकरण ही गतियों की सहजता को संभव बनाता है।''***
7. **परस्पर संबंध का सिद्धांत :–** विकास की सभी दशाएं– शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि एक–दुसरे से परस्पर संबंधित है। इनमें से किसी भी एक दिशा में होने वाला विकास अन्य सभी दिशाओं में होने वाले विकास को पूरी तरह प्रभावित करने की क्षमता रखता है।
8. **निश्चित एवं पूर्व कथनीय प्रतिरूप का सिद्धांत :–** बालक का शारीरिक विकास दो नियमों के आधार पर चलता है–
   1. ***मस्तिष्काधोमुखी/सिरःपुच्छीय (Cephalo caudal)***:–इसके अनुसार शारीरिक विकास पहले सिर के क्षैत्र में, फिर धड तथा अंत में पैरों के क्षैत्र में होता है अर्थात विकास सिर से पैरों की दिशा में होता है।
   2. ***निकट–दूर (Proximo distal)***– सुषुम्ना नाडी के पास के क्षैत्रों में पहले और इन नाडी से दूर क्षैत्र में विकास देर से होता है।

   लगभग 18 वर्ष की अवस्था तक मानसिक और शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है। इन विकास प्रतिमानों के आधार पर शारीरिक विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है।

9. **विकास की दिशा का सिद्धांत :–** इस सिद्धांत के अनुसार विकास की प्रक्रिया पूर्व निश्चित दिशा में आगे बढती है। यानी मानव विकास सिर से शुरू होकर पैर की ओर चलता है। जन्म लेने के प्रथम सप्ताह में बालक अपने सिर को उठा पाता है। तीन माह के बाद वह अपनी आंखों पर नियंत्रण कर लेता है। छः माह में वह अपने हाथों की गति करने लगता है। एक वर्ष में स्वयं बैठने और घिसट कर चलने लगता है।

   कप्पूस्वामी –''विकास मस्तिष्काधोमुखी और निकट–दूर क्रम में होता है।''

10. **विकास लम्बवत, सीधा न होकर वर्तुलाकार होता है** –विकास रेखीय न होकर चक्रीय होता है। विकास मंद, तीव्र अथवा शिथिल भी हो सकता है। निश्चित विकास के बाद विकास को संगठित करने के लिए विराम का समय आता है।

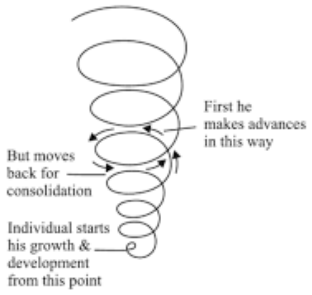

Fig. 5.1 Development is spiral.

विभिन्न अवस्थाओं में विकास

(Growth and Development at Different Stages)

पहलू (Aspect)	शैशवावस्था(Infancy) जन्म से 2 वर्ष तक	बाल्यावस्था (Childhood) 2 वर्ष से 12 वर्ष तक	किशोरावस्था(Adolescent) 12 वर्ष से 18 वर्ष तक
शारीरिक विकास	शारीरिक विकास में तीव्र वृद्धि (लम्बाई एवं भार में वृद्धि)	शारीरिक विकास में स्थिरता आ जाती है। विकास मंद गति से होता है।	यौवन आरंभ के लक्षण प्रकट होते है। विकास तीव्र गति से होता है।
मानसिक विकास	ध्यान, स्मरण, चिंतन, मनन, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण आदि से विकास में तीव्रता आती है।	मानसिक विकास में दृढता दिखाई पडती है। चंचलता कम होने लगती है। मस्तिष्क परिपक्व दिखाई पडता है। बालक वयस्क की तरह व्यवहार करना	मानसिक क्षमता जैसे स्मृति, कल्पना, चिंतन, निर्णय लेने की क्षमता एवं तर्क शक्ति क्षमता अधिक विकसित हो जाती है। किशोर–किशोरियों में

		चाहता है। रॉस ने इसे **मिथ्या परिपक्वता का काल(Pseudo Maturity stage) कहा है।**	विपरीत मानसिक दशाऐं (Contrasting Mental Mood)विकसित होने लगती है।
सामाजिकता	प्रारंभ में सामाजिकता न्यून किंतु बाद में अर्थात 02 वर्ष तक अपने परिवार का सहयोग देने लगता है।	इस अवस्था में बालक विद्यालय में प्रवेश करता है। अतः उसमें सहयोग, सहनशीलता एवं सहानुभूति के गुण विकसित होने लगते है।	समाज सेवा की प्रबल भावना विकसित होती है। मित्र, समाज एवं देश के लिए त्याग एवं बलिदान की भावना प्रबल हो जाती है।
जिज्ञासा प्रवृति	जिज्ञासा की प्रवृति बहुत अधिक होती है। वस्तुओं को फेंककर एवं वस्तुओं को तोडकर जिज्ञासा को शांत करता है।	इस अवस्था में जिज्ञासा प्रवृति अधिक प्रबल हो जाती है। इस अवस्था में बालक क्यों? तथा कैसे? के प्रश्न अधिक पूछता है।	तर्क एवं वितर्क के द्वारा विषय को समझना चाहता है।
संवेगों का प्रदर्शन	प्रारंभ में उतेजना के अतिरिक्त कोई संवेग नही होता। किंतु रोना चिल्लाना व पैर फेंकने का संवेग का प्रदर्शन माना जाता है। बाद में (2 वर्ष तक) भय, क्रोध, घृणा, प्रेम जैसे संवेग विकसित हो जाते है।	संवेगात्मक स्थिरता प्रतीत होता है।	किशोरावस्था में संवेगात्मक स्थिति प्रबल होती है। इसे शैशवावस्था की पुनरावृति माना जाता है।
काम प्रवृति	फ्रायड के अनुसार इस अवस्था में काम प्रवृति प्रबल होती है। बालक इसका प्रदर्शन माता के स्तन पान द्वारा अथवा हाथ पैर के अंगूठे चूस कर करते है। कामुकता का क्षैत्र मुख एवं गुदा होता है।	पूर्व बाल्यावस्था में लडकों में मां के प्रति प्रेम को ऑडीपस भावना ग्रंथि(Oedipus Complex) नाम से तथा लडकियों के पितृ प्रेम भाव को इलेक्ट्रा भावना ग्रंथि (Electra Complex) कहा है। उतर बाल्यावस्था में काम	यौन आवेग पुनः जाग्रत हो जाता है। किशोरावस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता काम इंन्द्रियों की सक्रियता एवं परिपक्वता है। किशोर एवं किशोरी काम संबंध स्थापित करने में सक्षम हो जाते है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

		प्रवृति की न्यूनता होती है। इस अवस्था में माता व पिता विरोधी काम ग्रथियां लगभग समाप्त हो जाती है। यौन आवेग सुप्तावस्था में रहता है।	
स्वप्रेम की भावना	इस अवस्था में स्वप्रेम (Narcisism) की भावना प्रबल होती है। बालक चाहता है कि केवल उसे ही सभी का प्रेम एवं स्नेह मिलें।	स्वप्रेम की भावना लगभग समाप्त हो जाती है।	इस अवस्था में स्वप्रेम की भावना ओर प्रबल हो जाती है। बालक स्वयं को स्वस्थ रखना, सुडौल बनाना एवं सुंदर बनाने का प्रयत्न करता है।
दोहराने की प्रवृति	शिशु शब्द, वाक्य एवं क्रियाओं का दोहराता है। इस क्रिया में शिशु को एक प्रकार का आंनद मिलता है।	रचनात्मक कार्यो में रूचि – बालक लकडी, कागज मिट्टी आदि से खेल करने एवं लडकियां रसोई, कढाई, बुनाई, सिलाई आदि में रूचि लेने लगती है।	व्यवसाय की चितां – किशोर, किशोरी प्राय भावी व्यवसाय के चुनाव के प्रति चिंतित एवं तनावग्रस्त रहते है।
निर्भरता	इस अवस्था में अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहता है। विशेषकर अपनी माता पर निर्भर रहता है।	आत्मनिर्भरता की भावना – इस अवस्था में बालक स्नान करना, वस्त्र पहनना एवं स्कूल के लिए तैयारी खुद करता है। वह अपने कार्यों को स्वयं करना चाहता है।	ईश्वर तथा धर्म में विश्वास – इस अवस्था में ईश्वर के प्रति आस्था एवं धर्म में विश्वास विकसित होता है।
सीखने की तीव्रता	शिशु के सीखने की गति शैशवावस्था में अत्यंत तीव्र होती है।	संग्रह प्रवृति (Acqulsition Tendency) बालक में कांच की गोंलियां, टिकट, पत्थर के टूकडे एवं बालिकाओं में गुडियों खिलौनों एवं छोटे–छोटे कपडे इकट्ठे करने की प्रवृति बढती है।	वीर पूजा की भावना – अपने विचार एवं आदर्श के अनुरूप नायक या नायिका का चयन कर उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखते है। एवं उनके आदर्शों पर चलने का प्रयास करते है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
PUNGARPUR

मूल प्रवृतियों पर आधारित व्यवहार	शैशवावस्था में बालक का व्यवहार मूल प्रवृतियों से प्रभावित होता है। जैसे– भूख लगने पर रोना, क्रोध आने पर हाथ–पैर मारना आदि।	रूचियों में परिवर्तन –रूचियों में स्थायित्व नही होता है। वातावरण तथा समूह में परिवर्तन के साथ रूचियों में परिवर्तन होता रहता है।	प्रारंभ में रूचियों में परिवर्तन होता है किंतु बाद के वर्षों में रूचियों स्थायी हो जाती है। शरीर को आकर्षक बनाना, विषम लिंगी की ओर आकर्षित होना तथा पत्र–पत्रिकाऐं पढना एवं चलचित्र आदि देखना किशोर एवं किशोरी के समान गुण है। किशोर की रूचि खेलकूद एवं घर से बाहर घूमने फिरने जबकि किशोरी की नृत्य, संगीत व घरेलू कार्यों में होती है।
नैतिक भावना	शिशु में नैतिक भावना(अच्छा–बुरा, उचित–अनुचित आदि) का ज्ञान नही होता है। वह वही कार्य करना चाहता है। जिससे उसे आनंद तथा संतुष्टि प्राप्त होती है। चाहे वह कार्य बडों की दृष्टि से अवांछनीय क्यों न हों।	बर्हिमुखी प्रवृति –इस अवस्था में बालक बर्हिमुखी होने लगता है। वह बाह्य जगत में रूचि लेता है। वह अन्य व्यक्ति, वस्तु या कार्य के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहता है।	अपराध प्रवृति का विकास – इच्छापूर्ति में बाधा, निराशा, नए अनुभव प्राप्त करने की इच्छा आदि के कारण बालक में अपराध की प्रवृति विकसित हो जाती है।
	–	समूह की प्रवृति	स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान की भावना

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

विकास की अवस्थाएं

I-शैशवावस्था(Infancy) :– जन्म के पश्चात् विकास की प्रथम अवस्था शैशवावस्था कहलाती है। शैशवावस्था जीवन का सबसे महत्वपूर्णकाल है।

परिभाषाऐं :–

1. **फ्रायड** –''मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है, वह 4– वर्षो में बन जाता है।''
2. **गुड एनफ** –''व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है।''
3. **स्ट्रेंग** –''जीवन के प्रथम दो वर्षो में बालक अपने भावी जीवन की आधारशिला/शिलान्यास करता है।''
4. **जे.न्यूमैन** –''5 वर्ष तक की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिए बडी ग्रहणशील रहती है।''
5. **थॉनडाईक** –''3 से 6 वर्ष तक के बालक प्रायः अर्ध–स्वपनों की दशा में रहते है।
6. **वेलेटार्न्ईन** –''शैशवावस्था सीखने का आर्दशकाल है।''
7. **वाटसन** –''शैशवावस्था में सीखने की सीमा और तीव्रता, विकास की और किसी अवस्था से बहुत अधिक होती है।''
8. **रूसों**–''बालक के हाथ, पैर और नेत्र उसके प्रारम्भिक शिक्षक है। इन्ही के द्वारा वह पांच वर्ष में ही पहचान सकता है, सोच सकता है और याद कर सकता है।''
9. **क्रो एण्ड क्रो** –''पांच वर्ष का शिशु कहानी सुनते समय उससे संबंधित चित्रों को पुस्तक में देखना पंसद करता है।''
10. **क्रो एण्ड क्रो**–''बीसवीं शताब्दी बालक की शताब्दी है।''
11. **ऐडलर** –''बालक के जन्म के कुछ माह बाद ही यह निश्चित किया जा सकता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है।''
12. **गेसल** –''बालक प्रथम 6 वर्षों में बाद के 12 वर्षों का दुगुना सीख लेता है।''
13. **ड्राईडेन** –''पहले हम अपनी आदतों का निर्माण करते है और फिर हमारी आदतें हमारा निर्माण करती है।''

शैशवावस्था के बारे में महत्वपूर्ण कथन –
सीखने का आदर्श काल –वेलेटाईन
भावी जीवन की आधारशिला –स्ट्रेंग
जीवन का सबसे महत्वपूर्णकाल
अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था
तीव्रता से शारीरिक विकास की अवस्था
क्षणिक संवेग की अवस्था
समुचित सांवेगिक विकास की दृष्टि से स्वर्णिम काल
खिलौनों की आयु (टॉय ऐज) –पूर्व बाल्यावस्था

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
BHILWARA

शैशवावस्था की विशेषताऐं एंव शिक्षा व्यवस्था निम्नलिखित है –

प्रमुख विशेषताऐं		शिक्षा की व्यवस्था	
1	शारीरिक विकास में तीव्रता	1	उपयुक्त वातावरण
2	मानसिक क्षमताओं में तीव्रता	2	स्नेहपूर्ण व्यवहार
3	सीखने में तीव्रता	3	जिज्ञासा की संतुष्टि
4	दोहराने की प्रवृति	4	मानसिक क्रियाओं के अवसर
5	जिज्ञासा प्रवृति पर	5	निहित गुणों का विकास
6	दूसरों पर निर्भरता	6	आत्म निर्भरता का विकास
7	स्वप्रेम की भावना	7	आत्म प्रदर्शन का अवसर
8	नैतिक गुणों का अभाव	8	अच्छी आदतों का निर्माण
9	काम–प्रवृति	9	विभिन्न अंगों की शिक्षा
10	कल्पना की सजीवता	10	वास्तविकता का ज्ञान
11	संवेगों का प्रदर्शन	11	चित्रों एवं कहानियों द्वारा शिक्षा
12	मूल प्रवृतियों पर आधारित व्यवहार	12	मूल प्रवृतियों को प्रोत्साहन
13	अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृति	13	क्रिया द्वारा शिक्षा
14	समाजिक भावना का विकास	14	खेल द्वारा शिक्षा

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

II-बाल्यावस्था(Childhood) :– शैशवावस्था की समाप्ति के बाद बाल्यावस्था प्रारंभ होती है।

बाल्यावस्था मानव जीवन का वह **स्वर्णिम समय** है जिसमें उसका सर्वागीण विकास होता है। बाल्यावस्था व्यक्तित्व निर्माण की अवस्था है।

परिभाषा –

1.ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन –''शैक्षिक दृष्टि कोण से जीवन–चक्र में बाल्यावस्था से महत्वपूर्ण और कोई अवस्था नही है।''

2. ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन –''बाल्यावस्था वह काल है जब व्यक्ति के बुनियादी दृष्टिकोण, मूल्य तथा आदर्श एक बडी सीमा तक निरूपति किये जाते है।''

3. **कोल एवं ब्रुश** –''बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल बताते हुए कहा–''वास्तव में माता–पिता के लिए बाल विकास की इस अवस्था को समझना कठिन है।''
4. **कोल एवं ब्रुश** –''बाल्यावस्था संवेगात्मक विकास की अनोखी अवस्था होती है।''
5. **कोल एवं ब्रुश** –''6 से 12 वर्ष की अवधि की एक अपूर्व विशेषता है– मानसिक रूचियों में स्पष्ट परिवर्तन।''
6. **स्ट्रेंग** –''ऐसा शायद ही कोई खेल हो, जिसे 10 वर्ष के बालक न खेलते हों।''
7. **कालसेनिक** –''बालक को आनंद प्राप्त करने वाली सरल कहानियों द्वारा नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए।

बाल्यावस्था के बारे में महत्वपूर्ण कथन –
स्थूल संक्रियात्मक अवस्था।
अनोखाकाल – कॉल व ब्रुश
निर्माण काल (भावी जीवन की सफलता एवं असफलता की नींव का काल)– फ्रायड
प्रारंभिक विद्यालय की आयु – ब्लेयर जोन्स ने शैक्षिक आयु कहा है।
वैचारिक क्रिया की अवस्था (7से 12 वर्ष)
टोली की आयु या दल/समूह की अवस्था
मिथ्या परिपक्वता का काल– जे0एस0 रॉस
खेल की आयु (गेम ऐज)
प्रतिद्वन्द्वात्मक सामाजीकरण की अवस्था – किलपैट्रिक
मूर्त चिंतन की अवस्था
कल्पना शक्ति एवं अमूर्त चिंतन के प्रारंभ का काल
बाल्यावस्था तीव्र शारीरिक क्रियाशीलता अभिवृद्धि का काल है।
नये कौशलों एवं क्षमताओं के विकास की वृद्धि में स्वर्णिम काल है।

बाल्यावस्था की विशेषताऐं एंव शिक्षा व्यवस्था निम्नलिखित है –

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

प्रमुख विशेषताऐं		शिक्षा की व्यवस्था	
1	शारीरिक एवं मानसिक विकास में स्थिरता	1	भाषा के ज्ञान पर बल
2	मानसिक योग्यताओं में वृद्धि	2	उपयुक्त विषयों का चयन
3	जिज्ञासा की प्रबलता	3	रोचक विषय सामग्री
4	काम प्रवृति की न्यूनता	4	पाठय विषय एवं शिक्षण विधि में परिवर्तन
5	वास्तविक जगत से संबंध	5	जिज्ञासा की संतुष्टि
6	रचनात्मक कार्यों में आनंद	6	रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था
7	सामुहिक प्रवृति की प्रबलता	7	सामुहिक प्रवृति की संतुष्टि
8	रूचियों में परिवर्तन	8	पाठ्यसहगामी क्रियाओं की व्यवस्था
9	निरूद्देश्य भ्रमण की प्रवृति	9	पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था
10	संग्रह करने की प्रवृति	10	संचय प्रवृति को प्रोत्साहन
11	संवेगों का दमन एवं प्रदर्शन	11	संवेगों के प्रदर्शन का अवसर
12	नैतिक गुणों का विकास	12	नैतिक शिक्षा
13	बर्हिमुखी व्यक्तित्व का विकास	13	क्रिया एवं खेल द्वारा शिक्षा
14	सामाजिक गुणों का विकास	14	प्रेम एवं सहानुभूति पर आधारित शिक्षा

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

III-किशोरावस्था(Adolescence) :– किशोरावस्था को अंग्रेजी में ''Adolescence'' कहते है। जो लैटिन भाषा के शब्द ''Adolescere''(एडोले सियर) से बना है। जिसका अर्थ है –''परिपक्वता या प्रजनन क्षमता का विकसित होना।''

किशोरावस्था बाल्यावस्था के समाप्त होने पर प्रारंभ होती है और प्रौढावस्था के प्रारंभ में समाप्त हो जाती है। इसे जीवन का बंसत काल भी कहा जाता है। यह

विकास की अवस्था बाल्यकाल एवं प्रौढावस्था के मध्य संधिकाल (संक्रमण काल) के नाम से भी जानी जाती है।

परिभाषा –

1.स्टेनली हॉल –''किशोर में शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते है वे अकस्मात होते है।''

2. **वेलेटाईन –**''घनिष्ठ तथा व्यक्तिगत मित्रता उतर किशोरावस्था की विशेषता होती है।''

3. **किलपैट्रिक –**'' किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।''

4. **कॉलसेनिक –**''किशोर, प्रौढों को अपने मार्ग में बाधा समझता है जो उसे अपनी स्वतंत्रता का लक्ष्य प्राप्त करने से रोकते है।''

5. **ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन** –''किशोरावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अंत में प्रारंभ होता है और प्रौढावस्था के आरंभ में समाप्त होता है।''

6. **रॉस –**''किशोरावस्था, शैशवावस्था की पुनरावृति काल है।''

7. **रॉस** –''किशोर, समाज सेवा के आदर्शों का निर्माण और पोषण करता है।''

8. **हैडो कमेटी** – ''11 या 12 वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना प्रारभ हो जाता है। इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यदि इस ज्वार का समय पहले उपयोग कर लिया जाये और इसकी शक्ति तथा धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरंभ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।''

9. **क्रो एण्ड क्रो :–** ''किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।''

10. **कुल्हन :–** ''किशोरावस्था बाल्यकाल तथा प्रौढावस्था के मध्य का परिवर्तन काल है।''

11.**रोजर –** '' किशोरावस्था समाज में प्रभावशाली भाग लेने के लिए अभिवृतियों व विश्वासों की प्राप्ति कर सकती है।''

12. विग एण्ड हट –''किशोरावस्था को व्यक्त करने वाला एक ही शब्द है वह परिवर्तन है।''

13. **जीन पियाजे –**''किशोरावस्था महान आदर्शों व वास्तविकताओं से अनुकुलन का समय है।''

किशोरावस्था के विकास के सिद्धांत :–

1. **आकस्मिक विकास का सिद्धांत :–** इस सिद्धांत का समर्थन स्टेनले हॉल करते है। इनके द्वारा लिखित पुस्तक ''**एडोलेसेंस**'' में इस सिंद्धांत की व्याख्या करते हुए लिखा है कि – किशोर में होने वाले परिवर्तन अचानक उत्पन्न होते है। इनका विकास की पूर्ण अवस्थाओं से कोई संबंध नही होता है।
2. **क्रमिक विकास का सिद्धांत :–** इस सिद्धांत के समर्थक किंग, थार्नडाइक और हालिंगवर्थ है। यह सिद्धांत कहता है कि किशोर में होने वाले परिवर्तन निरंतर और क्रमशः होते है।

   किंग के अनुसार –''जिस प्रकार एक ऋतु का आगमन दूसरी ऋतु के अंत में होता है, पर जिस प्रकार पहली ऋतु ही दूसरी ऋतु के आगमन के चिन्ह दिखाई देने

लगते है। उसी प्रकार बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था एक–दूसरे से संबंधित रहती है।''

किशोरावस्था के बारे में महत्वपूर्ण कथन –
पूर्व किशोरावस्था / वयसंधिकाल – 12 से 16 वर्ष
उत्तर किशोरावस्था – 17 से 19 वर्ष
सामाजिक स्वीकृति की अवस्था
उलझन व अटपटी अवस्था
बसंत ऋतु
स्वर्णिम काल (Golden Age)
''तनाव, तुफान व संघर्ष की अवस्था''– **स्टेनले हॉल**

किशोरावस्था की समस्याएं :–

1. शारीरिक परिवर्तनों की समस्या (कालसैनिक –शरीर व स्वास्थ्य की चिंता रहती है)
2. मानसिक विकास में जिज्ञासा की समस्या
3. संवेगों की अस्थिरता की समस्या –क्रोध, घृणा, चिडचिडापन
4. महत्वाकांक्षा की समस्या –एक साथ विभिन्न कार्य करना
5. अपराधी प्रवृति की समस्या
6. मानसिक द्वंद की समस्या– उलझन में रहता है।
7. सामाजिक दबाव की समस्या
8. मादक द्रव्य की समस्या – नशा करता है।
9. अपचार की समस्या – चोरी करना, झूठ बोलना, घर से भाग जाना
10. आहार–विकार की समस्या –

एलोक्सा नरवोसा	अपने आप को पतला रखने का प्रयास
बुलिमिया	ज्यादा खाना

11. शरीर के अवयवों में परिवर्तन – मासिक धर्म, स्वपन दोष

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

किशोरावस्था की विशेषताऐं एंव शिक्षा व्यवस्था निम्नलिखित है –

प्रमुख विशेषताऐं		शिक्षा की व्यवस्था	
1	शारीरिक विकास	1	शारीरिक विकास के लिए शिक्षा
2	मानसिक विकास	2	मानसिक विकास के लिए शिक्षा
3	व्यवहार में विभिन्नता	3	संवेगात्मक विकास के लिए शिक्षा
4	घनिष्ठ एवं व्यक्तिगत मित्रता	4	सामाजिक संबंधों के विकास के लिए शिक्षा
5	स्थिरता एवं समायोजन का अभाव	5	व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा
6	स्वंतत्रता व विद्रोह की भावना	6	पूर्व व्यावसायिक शिक्षा
7	काम शक्ति की परिपक्वता	7	जीवन कौशल/यौन शिक्षा
8	समूह को महत्व	8	उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग
9	रूचियों में परिवर्तन एवं स्थिरता	9	किशोर–किशोरियों के पृथक पाठ्यक्रम
10	समाज सेवा की भावना	10	किशोर के प्रति वयस्क समान व्यवहार
11	वीर पूजा की भावना	11	जीवन दर्शन की शिक्षा
12	अपराध प्रवृति का विकास	12	अपराध प्रवृति पर अंकुश
13	व्यवसाय चुनाव की चिंता	13	किशोर निर्देशन
14	ईश्वर एवं धर्म में विश्वास	14	नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा
15	स्थिति एवं महत्व की अभिलाषा	15	किशोर के महत्व को मान्यता

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
BUNGARPUR

विकास के प्रकार/आयाम
(Dimensions and Type of Development)

1. शारीरिक विकास (Physical Development)

शारीरिक विकास का तात्पर्य शरीर रचना स्नायुमण्डल, मांसपेशीय वृद्धि, गामक तंत्र, अंतःस्त्रावी ग्रंथियों आदि में आए परिवर्तनों के फलस्वरूप विकसित कार्यक्षमता एवं कार्यकुशलता से होता है।

शारीरिक विकास का पक्ष	शैशवावस्था	बाल्यावस्था	किशोरावस्था
भार	लडका 7.15 पौंड लडकी 7.13 पौंड प्रथम 6 माह में भार दुगुना वर्ष के अंत में तीन गुना तथा 5 वर्ष के अंत में 38–43 पौंड के बीच होता है।	80–95 पौंड 10 वर्ष तक बालक का भार ज्यादा होता है। लेकिन 11 वें एवं 12 वें वर्ष में बालिका का भार बालक से ज्यादा होता है।	किशोर–किशोरियों का भार तेजी से बढता है तथा किशोरावस्था में दोनों के भार में **अंतर लगभग 25 पौंड** का होता है अर्थात् किशोर का भार किशोरी से 25 पौंड अधिक होता है।
ऊंचाई	लडका 20.5 इंच लडकी 20.3 इंच प्रथम वर्ष में ऊंचाई 10 इंच बढती है लेकिन बाद में धीमी गति से बढती है।	सबसे कम वृद्धि इस अवस्था में लंबाई में वृद्धि 10–12 इंच की ही होती है।	लडका – 18 से 21 वर्ष तक बढती है। लडकी – 16 वर्ष तक बढती है।
सिर एवं मस्तिष्क	नवजात शिशु के सिर की लंबाई उसकी कुल लंबाई का **25 प्रतिशत** या भाग होती है। प्रथम वर्षों में सिर तेजी से बढता है लेकिन फिर मंद गति से बढता है। नवजात शिशु के मस्तिष्क का **भार 350 ग्राम** होता है। जो 5 वर्ष मे परिपक्व मस्तिष्क के भार का 80 प्रतिशत हो जाता है।	सिर के आकार में परिवर्तन जारी रहता है। 5 वर्ष में सिर का आकार प्रौढ सिर के आकार का 90 प्रतिशत तथा 10 वर्ष में **95 प्रतिशत** हो जाता है। मस्तिष्क के भार में भी वृद्धि होती है तथा 9 वर्ष में यह परिपक्व मस्तिष्क के भार का 90 प्रतिशत हो जाता है। **(वजन–1260 ग्राम)**	15–16 वर्ष की आयु तक सिर का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। मस्तिष्क का भार भी बढकर **1200–1400 ग्राम** हो जाता है।
दांत	जन्म के 6 माह से दूध के दांत निकलने शुरू हो जाते है। 4 वर्ष की आयु तक दूध के सभी 20 दांत निकल आते है।	6 वर्ष से दूध के दांत गिरने लगते है तथा स्थायी दांत आने लगते है। 11–12 वर्ष तक स्थाई दांत आ जाते है।	इस अवस्था मे दांतों की संख्या 28 होती है। यदि **प्रज्ञा दांत** आने होते है तो ये किशोरावस्था के अंत में या प्रौढावस्था के प्रारंभ में आ जाते है।
हड्डियां	नवजात शिशु में **हड्डियों की संख्या 270** होती है। ये हड्डियां छोटी कोमल तथा लचीली होती है। कैल्शियम,	बाल्यावस्था में हड्डियों की संख्या 270 से बढकर **350** हो जाती है। अस्थिकरण की प्रक्रिया बालकों की तुलना में	किशोरावस्था में अस्थिकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है तथा कई छोटी–छोटी हड्डियां आपस में जुड जाती है। जिससे **हड्डियों**

SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

	फॉस्फोरस तथा अन्य खनिज लवणों से यह कठोर एवं मजबूत होती है। इसे **अस्थायीकरण/अस्थि निर्माण** कहा जाता है।	बालिकाओं में तीव्र होती है।	**की संख्या 206** हो जाती है।
मांस पेशियां	नवजात शिशु के कुल भार का 23 प्रतिशत	12 वर्ष में कुल भार का 85 प्रतिशत	16 वर्ष में कुल भार का 44 प्रतिशत
धडकन	140 प्रति मिनिट 6 वर्ष तक – 100 प्रति मि0	85 प्रति मिनिट	72 प्रति मिनिट लडकियों में 69 प्रति मिनिट
नोट :– शैशवावस्था के 3 वर्षों में शारीरिक गति तीव्र, बाद में मंद तथा किशोरावस्था के पहले 3 वर्षों में तीव्र होती है।			

- **<u>शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक</u> :–**
  1. वंशानुक्रम (पैतृक विशेषताएं व गुण)
  2. वातावरण
  3. नियमित दिनचर्या
  4. नियमित विश्राम
  5. खेलकूद व योग का प्रभाव
  6. अंतःस्त्रावी ग्रंथियां
  7. संवेगात्मक व सामाजिक समायोजन
  8. पर्याप्त व अपर्याप्त चिकित्सा सुविधा

  नोट – शिक्षक व विद्यालय का सबसे कम प्रभाव पडता है।

- **<u>शिक्षक के लिए शारीरिक विकास का महत्व :–</u>**
  1. बालक के सर्वांगीण विकास पर बल
  2. शारीरिक विकास पर ही अन्य विकास निर्भर होते है।
  3. शारीरिक योग्यता व क्षमताओं के पर्याप्त विकास में सहायता
  4.

2. <u>मानसिक विकास (Mental Development)</u>

मानसिक विकास का तात्पर्य मानव ज्ञान भंडार में वृद्धि होने तथा उसका प्रयोग करने की क्षमता से है। मानसिक विकास के अंतर्गत विभिन्न मानसिक शक्तियों जैसे – संवेदनशीलता, प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यय निर्माण, ध्यान, स्मृति, कल्पना, चिंतन, निर्णय, समस्या समाधान आदि का विकास निहित होता है।
<u>हरलॉक</u> –''कोई भी दो बालक समान मानसिक योग्यता के नही होते है।''

<u>शैशवावस्था में मानसिक विकास</u> :–

जॉन लॉक के अनुसार –''नवजात शिशु का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है, जिस पर अनुभव लिखता है।''

प्रथम माह	शिशु भूख एवं कष्ट का अनुभव होने पर अलग–अलग प्रकार से चिल्लाता है।
द्वितीय माह	शिशु ध्वनि के प्रति आकर्षित होता है तथा सब स्वरों की ध्वनियां उत्पन्न करने लगता है।
चतुर्थ माह	शिशु सब व्यंजनों की ध्वनियां उत्पन्न करता है। मां एवं अन्य परिवार जनों को देखकर मुस्कुराता है।
छठे माह	शिशु अपना नाम समझने लगता है तथा सुनी हुई आवाज का अनुसरण करता है।
आठवें माह	शिशु अपने पास रखे विभिन्न खिलौनों में से अपने पंसद का खिलौना छांट लेता है।
दसवां माह	शिशु अपने आस–पास के वातावरण को पहचानने लगता है। वस्तुओं को तोडना–फोडना चाहता है तथा पसंद का खिलौना छिने जाने पर रो कर विरोध प्रकट करता है।
1 वर्ष	शिशु 4 शब्द बोलता है तथा अन्य व्यक्तियों के कार्य का अनुकरण करने का प्रयास करता है।
2 वर्ष	शिशु 2–3 शब्दों का वाक्य बना लेता है एवं बोलता है। वर्ष के अंत तक शब्द भंडार 100–200 शब्द हो जाता है।
3 वर्ष	शिशु पूछने पर अपना नाम बता देता है। 5–7 शब्दों का वाक्य बना लेता है। सीधी रेखा खींचने का प्रयास करता है।
4 वर्ष	शिशु 10 तक गिनती गिन लेता है। अक्षर लिखने लगता है तथा वस्तुओं को क्रम में रखता है। छोटी और बडी रेखाओं में अंतर बता देता है।
5 वर्ष	शिशु 10–11 शब्दों का वाक्य बोलने लगता है। मुख्य रंगों को पहचानता है तथा छोटे–बडे एवं हल्के–भारी का ज्ञान रखने लगता है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

बाल्यावस्था में मानसिक विकास :–

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार –''बालक जब 6 वर्ष का हो जाता है तो उसकी मानसिक योग्यताओं का लगभग विकास हो जाता है।''

6 वर्ष	बालक 15–20 तक गिनती गिन लेता है। सरल प्रश्नों के उतर देता है तथा चित्र को देखकर उसमें बनी वस्तुओं के बारे में बता देता है।
7 वर्ष	बालक में दो वस्तुओं में अंतर करने की योग्यता विकसित हो जाती है। वह छोटी–छोटी घटनाओं का वर्णन करने लगात है।
8 वर्ष	बालक छोटी कहानियों तथा कविताओं को दोहराने लगता है। कहानी से जुडे प्रश्नों के उतर देने की योग्यता आ जाती है और प्रतिदिन की साधारण समस्याओं का हल खोज लेते है।
9 वर्ष	बालक दिन, दिनांक, समय, वर्ष, सिक्के, द्रव्यमान आदि के बारे में समझने लगता है। जोड, बाकी, गुणा, भाग की सामान्य समस्याओं को हल कर लेता है।
10 वर्ष	बलक 3 मिनट में 60–70 शब्द बोलने लगता है। उसका दैनिक जीवन के नियमों, परम्पराओं, सूचनाओं आदि का थोडा–बहूत ज्ञान हो जाता है।
11 वर्ष	बालक में निरीक्षण एवं जिज्ञासा की मानसिक शक्तियां विकसित हो जाती है। इसलिए वह इस आयु में विभिन्न वस्तुओं का निरीक्षण करके ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।
12 वर्ष	इस आयु में बालक में तर्क एवं समस्या समाधान की योग्यता विकसित हो जाती है। इसलिए वह कठिन शब्दों की व्याख्या तथा सामान्य बातों के कारण बताने लगता है।

किशोरावस्था में मानसिक विकास :–

एलिस क्रो के अनुसार –''किशोर का चिंतन पक्षपात व पूर्व निर्णयों से प्रभावित रहता है।''

वुडवर्थ के अनुसार –''15 से 20 वर्ष की अवस्था में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा तक पहुंच जाता है।''

किशोरावस्था में 15–20 वर्ष की आयु में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा पर होता है। किशोरावस्था में मानसिक विकास की विशेषताऐं निम्न प्रकार से है –

1. **चिंतन में औपचारिक संक्रियाएं (Formal Operations in Thinking)** – किशोरावस्था में मानसिक विकास की एक विशेषता यह है कि इसमें किशोर काल्पनिक रूप से किसी वस्तु या घटना के बारे में चिंतन कर लेता है। अब ऐसा करने के लिए उसके सामने वस्तु का होना अनिवार्य नही है। इस अवस्था में किशोरों का चिंतन अधिक क्रमबद्ध होता है और सभी तरह की औपचारिक संक्रियाओं की मदद से वे विभिन्न तरह का विश्लेषण कर सकने में समर्थ होती है।

2. **एकाग्रचितता (Concentration)**:–इस अवस्था में किशोरों का मानसिक विकास इस स्तर का हो जाता है कि उनमें एकाग्रचित होने की क्षमता बढ जाती है। इस तरह की क्षमता हालांकि उतर बाल्यावस्था में भी होती है परंतु उसमें यह उतनी अधिक विकसित नही होती है।
3. **तथ्यों का सामान्यीकरण करने की क्षमता (Ability to generalise Facts)**:– समस्या समाधान में वह जिन नियमों को सीखता है उसके सहारे अन्य दूसरी समस्याओं का भी समाधान आसानी से करता पाया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किशोरावस्था में किशोरों में अमूर्त ढंग से सामान्यीकरण करने की क्षमता होती है।
4. **दूसरों के साथ संचार करने की क्षमता में वृद्धि (Increase in the Ability to Communicate with Others)**:– किशोरावस्था में मानसिक विकास इतना हो जाता है कि वे किसी भी व्यक्ति के साथ किसी भी विषय पर स्पष्ट रूप से विचार–विर्मश तार्किक ढंग से कर सकते है।
5. **समझ एवं पकड की क्षमता में वृद्धि (Increase in the Ability to catch and understand)**:– किशोरों में दूसरों के व्यवहारों एवं अंतक्रियाओं को समझने की क्षमता काफी बढ जाती है। वे जल्दी ही किसी बात में छिपे गूढ तथ्य को समझ लेते है। तथा कठिन से कठिन समस्या का समाधान कर लेते है।
6. **निर्णय करने की क्षमता में वृद्धि (Increase in the Ability to make Decisions)**
7. **स्मृति शक्ति का विकास (Development of Memory Power)**
8. **नैतिक संप्रत्ययों की समझ(Understanding moral Concepts)**:– किशोरावस्था के मानसिक विकास एक विशेषता यह है कि इस अवस्था में किशोरों में नैतिक मूल्यों का विकास हो जाता है। वैसे तो कुछ नैतिक मूल्यों का विकास उतर बाल्यावस्था (Later Childhood) में हो जाता है। परंतु उतर बाल्यावस्था में उसे जो कुछ अपने माता–पिता या शिक्षक द्वारा कहा जाता है, उसे वह आंख मूंदकर मान लेता है। परंतु इस अवस्था में वह नैतिक मूल्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है तथा सामाजिक मूल्यों के अनुसार अच्छा क्या है और बुरा क्या है, के बीच स्पष्ट रूप से अंतर कर लेता है।
9. **समस्या का अमूर्त संकेतों द्वारा समाधान करने की क्षमता (Ability to Solve Problems by Abstract Symbols)** :– किशोरों में अमूर्त चिंतन की क्षमता काफी बढ जाती है। उनमें मानसिक परिपक्वता इतनी अधिक बढ जाती है कि वे उन समास्याओं के समाधान पर सफलतापूर्वक चिंतन करना प्रारंभ कर देते है जिनमें संकेतों एवं चिन्हों के सहारे समाधान ढूंढा जा सकता है। वे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समस्याओं पर चिंतन प्रारंभ कर देते है और इन समस्याओं के बारे में अमूर्त गुणात्मक संप्रत्ययों के रूप में चिंतन करने की अद्वितीय क्षमता उनमें विकसित हो जाती है।
10. **बाहरी दुनिया के प्रमुख व्यक्तित्व एवं परिस्थितियों के साथ तादात्म्य (Identification with Major Personalities and Conditions of**

SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

External Worlds):– किशोरों में मानसिक परिपक्वता इतनी अधिक हो जाती है कि वे बाहरी दुनिया के उन व्यक्तियो, जिन्हें वे महत्वपूर्ण समझते है, के साथ एक तादात्म्य स्थापित कर लेते है और इस तरह अपने में कुछ वैसे गुणों को विकसित कर लेते है जिनमें किसी समस्या के समाधान में उन्हें अधिक सहूलियत होती है।

- **मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :–**
- वंशानुक्रम (गेट्स– किसी का विकास उससे ज्यादा नही हो सकता जितना कि वंशानुक्रम संभव बनाता है।)
- वातावरण
- शारीरिक स्वास्थ्य (अरस्तु –स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।)
- परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति
- माता–पिता की शिक्षा
- विद्यालय व शिक्षक का प्रभाव
- परिपक्वता

3. सामाजिक विकास (Social Development)

हरलॉक के अनुसार –''सामाजिक विकास सामाजिक संबंधों में परिपक्वता प्राप्त करने का नाम है।''

सोरेन्सन के अनुसार –''सामाजिक वृद्धि तथा विकास से भाव है अपने आप के साथ तथा दूसरों के साथ भली भांति निर्वाह करने की योग्यता प्राप्त करना।''

रॉस के अनुसार –''सहयोग करने वाले लोगों में 'हम भावना' का विकास और उनके साथ काम करने की क्षमता का विकास तथा संकल्प समाजीकरण कहलाता है।''

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार –''जन्म के समय बालक ना तो सामाजिक होता है और ना ही असामाजिक।''

गेट्स व अन्य –''सामाजिक प्राणी के रूप में व्यक्ति के व्यवहार का विकास उसके व्यक्तित्व के विकास के रूप में होता है।''

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
BUNGARPUR

शैशवावस्था में सामाजिक विकास :–

1 माह	मानवीय आवाज और अन्य आवाजों में अंतर ना समझ पाना।
2 माह	मनुष्य की आवाज पहचानना और व्यक्ति को देखकर मुस्कुराना।
3 माह	अपनी माता को पहचानना और उसकी अनुपस्थिति में प्रसन्न न होना।
4 माह	व्यक्तियों की तरफ विशेष ध्यान देना और उनको देखकर प्रसन्नता महसूस करना।

5 माह	मुस्कान और डांट की भिन्न–भिन्न प्रतिक्रिया तथा मैत्रीपूर्ण और क्रुद्ध आवाजों में अंतर समझना।
6 माह	जाने–पहचाने लोगों को देखकर मुस्कुराना और अजनबियों को देखकर डर की अभिव्यक्ति करना। बडों के प्रति विद्रोही भाव दिखाना जैसे बडों के बाल, कपडे, चश्मा खींचना।
8–9 माह	दूसरों के बोले जाने वाले शब्दों और हाव भाव का अनुकरण करने लगना।
10–12 माह	अपने प्रतिबिम्ब के साथ खेलना और शीशे में देखकर अपने आप को किस करना।
15 माह	बडों के साथ रहने की प्रवृति दिखाई देना।
13–18 माह	अपने खिलौने से हटकर अपने साथियों में रूचि हो जाना।
2 वर्ष	बालकों को कई कामों में सहयोग देना और परिवार का सक्रिय सदस्य बनाना।
4–5 वर्ष	शिशु का विद्यालय में जाना और नई दुनिया में प्रवेश करना है। उसके व्यवहार में परिवर्तन होना और नए सामाजिक संबंध स्थापित करना।
5–6 वर्ष	नैतिक भावना का विकास होने लगता है।

FIRST STEP OF SUCCESS

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास :–

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARGARH

- बालक में सामाजिकता का सर्वाधिक विकास होता है। जैसे– सहयोग, उतरदायित्व, बडों का सम्मान करना।
- टोली का सदस्य बन जाना – समूह समायोजन, समूह के प्रति वफादारी।
- सुझाव ग्रहण करने की प्रवृति – सामाजिक प्रतिस्पर्धा, सामाजिक सूझ का विकास।
- लैंगिक अलगाव –8 वें वर्ष में।
- सुझाव व ग्रहणशीलता की आयु– 7–8 वर्ष।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास :–

- जटिल सामाजीकरण की अवस्था।
- सामाजिक चेतना का विकास – समाज में ज्ञान का सीान।
- लिंग चेतना – विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण।
- सामाजिक परिपक्वता – बडों के प्रति आकर्षण।
- समाज सेवा की भावना।
- समूह के प्रति वफादारी।
- सामाजिक रूचियों का विकास –मित्र बनाना, नेतृत्व।
- नेतृत्व के गुण का सर्वाधिक विकास
- स्वयं के समूह के सक्रिय सदस्य बन जाता है।

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :–

1. वंशानुक्रम (**क्रो एण्ड क्रो** –''बालक की पहली मुस्कान वंशानुक्रम की देन होती है।'')
2. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य।
3. संवेगात्मक स्वास्थ्य।(**क्रो एण्ड क्रो** –''सामाजिक व संवेगात्मक विकास साथ–साथ चलते है। '')
4. परिवार का प्रभाव –सर्वाधिक प्रभावित (पेस्टोलॉजी– बच्चे का पहला स्कूल : परिवार)
5. शिक्षक व विद्यालय का प्रभाव –(औटावे ने विद्यालय को सामाजिक आविष्कार कहा है।)
6. लिंग का प्रभाव।
7. सिनेमा व साहित्य का प्रभाव।
8. खेलकूद(**स्कीनर व हैरीमैन** – खेल का मैदान बालक का निर्माण स्थल है।)
9. समूह का प्रभाव (**हरलॉक** –समूह के प्रभाव के कारण बालक सामाजिक व्यवहार का महत्वपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करता है।)
10. मित्र मण्डली का प्रभाव, समुदाय, धार्मिक संस्था का प्रभाव। (**क्रो एण्ड क्रो** – ''जब बालक 13 या 14 वर्ष की आयु में प्रवेश करता है। तब उसके अनुभव व दृष्टिकोण के साथ सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन होने लग जाता है।'')

4. संज्ञानात्मक विकास

(Congnitive Development)

संज्ञान से तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से होता है जिसमें संवेदन(Sensation),प्रत्यक्षण(Perception),प्रतिमा(Imagery),धारणा(Retention), प्रत्याह्वान(Recall), समस्या समाधान, चिंतन(Thinking), तर्कणा(Reasoning) जैसी मानसिक प्रक्रियाऐं सम्मिलित होती है।

संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य बालकों में किसी संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उस पर चिंतन करने तथा क्रमिक रूप से उसे इस लायक बना देने से होता है जिसका प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में करके वे तरह–तरह की समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकते है। इस ढंग का विकास बालकों में होने वाले बौद्धिक विकास से संबंधित है जो वर्ग में शिक्षकों के लिए एक प्रमुख विषय है।

- **जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के कुछ महत्वपूर्ण संप्रत्यय :–**

जीन पियाजे का योगदान संज्ञानात्मक विकास क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। पियाजे का जन्म 9 अगस्त 1896 ई0 में स्विटजरलैण्ड में हुआ। उन्होने 22 वर्ष की आयु में उपाधि प्राप्त कर ली।

इन्होने जीव विज्ञान एवं ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया के बीच संबंध खोजने का प्रयास प्रारंभ किया। मनोविज्ञान के प्रशिक्षण के दौरान उन्होने अल्फ्रेड बिने के निर्देशन में फ्रेन्च स्कूल के बच्चों के बुद्धि परीक्षण का कर्य भी किया।

वे बच्चों द्वारा बौद्धिक प्रश्नों पर दिए गए गलत उतरों से अधिक विचलित हुए।

उन्होने अपने तीनों बच्चों(लॉरेंट, ल्यूसीन व जैक्लीन) के मानसिक विकास से संबंधित समस्त लेखा–जोखा तैयार किया।

इनके विश्लेषण के बाद लगभग 400 से अधिक पुस्तकों एवं लेखों को प्रकाशित किया। 16 सितम्बर 1980 को पियाजे की मृत्यु हो गई।

जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिंद्धांत की पूर्णरूपरेखा की व्याख्या से पूर्व इस सिद्धांत के कुछ महत्वपूर्ण संप्रत्यय है, जो निम्नानुसार है :–

1. **अनुकूलन (Adaptation):–**अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने पूर्व ज्ञान एवं नवीन अनुभवों के मध्य संतुलन स्थापित करता है।

आत्मसात्करण (Assimilation)

नवीन अनुभव को पूर्ववर्ती अनुभव की सहायता से वर्तमान बौद्धिक क्षमताओं में व्यवस्थित करने से है।

समायोजन / समाविष्टीकरण (Accommodation)

समायोजन / समाविष्टीकरण से तात्पर्य नवीन अनुभवों की दृष्टि से पूर्ववर्ती बौद्धिक क्षमताओं में सुधार करने, विस्तार करने या परिवर्तन करने से है।

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNG

...द्धिक ... वर्ष के एक बच्चे को एक सफेद कुते के विषय में बताया जाता है तो उसे पता चलता है कि कुते की दो आंखे है, दो कान है, एक मुंह एवं चार पैर होते है। लेकिन बालक सफेद रंग की बकरी के बच्चे को देखकर उसे भी कुते का बच्चा समझता है। यह प्रक्रिया आत्मसातीकरण की प्रक्रिया है।

किंतु जब बालक कुते के विषय में यह जान जाता है कि कुता भौंकता है तो वह कुते एवं बकरी के बच्चे में अंतर करना सीख लेता है इसे समाविष्टीकरण की प्रक्रिया कहा जाता है।

बौद्धिक विकास एक स्वचालित प्रक्रिया है जिसमें बालक अपनी बौद्धिक संरचनाओं तथा नवीन अनुभवों में तालमेल बिठाना सीखता है।

2. **साम्याधारण (Equilibration) :–** ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति किसी नई परिस्थिति के कारण उत्पन्न संज्ञानात्मक असंतुलन को दूर कर संतुलन लाने का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में आत्मसातीकरण अथवा समाविष्टीकरण या दोनों प्रक्रिया सम्मिलित होती है। इस तरह से साम्यधारण(Equilibration) एक तरह की आत्म–नियंत्रक(Self Regulatory) प्रक्रिया है।
3. **संरक्षण(Conservation)**:–पियाजे के सिद्धांत में यह एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय है। संरक्षण से तात्पर्य वातावरण में परिवर्तन(Change) तथा स्थिरता(Constancy) दोनों को पहचानने एवं समझने की क्षमता तथा किसी वस्तु के रूप–रंग में परिवर्तन को उस वस्तु के तत्व में परिवर्तन से अलग करने की क्षमता से होता है।
4. **संज्ञानात्मक संरचना(Cognitive Structures):**–किसी बालक के मानसिक संगठन या मानसिक क्षमताओं के सेट को संज्ञानात्मक संरचना कहा जाता है। रिली, लेविस तथा टेनर के शब्दों में ''किसी बालक के मानसिक संगठन या क्षमताओं को ही संज्ञानात्मक संरचना कहा जाता है।'' संज्ञानात्मक संरचना के ही आधार पर एक 7 साल के बालक को 3 साल के बालक से भिन्न समझा जाता है।
5. **मानसिक सक्रिया**(Mental Operations):– जब भी बालक किसी समस्या समाधान पर चिंतन करता है, वह मानसिक संक्रिया करते समझा जाता है। अतः पियाजे के सिद्धांत में मानसिक संक्रिया चिंतन का एक प्रमुख साधन है। इस तरह कहा जा सकता है कि संज्ञानात्मक संरचना की संक्रियता ही मानसिक संक्रिया है।
6. **स्कीम्स** (Schemes):– व्यवहारों का संगठित पैटर्न जिसे आसानी से दोहराया जा सकता है। जैसे बालक द्वारा विद्यालय के लिए तैयार होने की नित्य/रूटिन क्रिया।
7. **स्कीमा**(Schema):– व्यक्ति की ऐसी मानसिक संरचना जिसका सामान्यीकरण किया जा सकता है।
8. **विकेन्द्रीकरण** (Decentering):– पियाजे के अनुसार विकेन्द्रण से तात्पर्य किसी वस्तु या चीज के बारे में वस्तुनिष्ठ या वास्तविक ढंग से सोचने की क्षमता से होता है।

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत :–

- जीन पियाजे को **''विकासात्मक मनोविज्ञान'' का जनक** माना जाता है।
- **जीन पियाजे के अनुसार** –''बालक वातावरण के साथ संबंध बनाते हुए समझ का विकास करता है।''
- जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास का व्यवस्थित अध्ययन किया।
- **पुस्तक – ''बाल चिंतन की भाषा''**

- **जीन पियाजे ने मानव संज्ञान विकास की चार अवस्थाओं में बांटा है :–**
  1. संवेदी/पेशीय/संवेदात्मक गामक अवस्था(**S**ensory **M**otor **S**tage) : 0–2 वर्ष
  2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (**P**re-**O**perational **S**tage) : 2 – 7 वर्ष
  3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था/स्थूल व्यवहार अवस्था (**C**oncrete **O**perational **S**tage) : 7 –12 वर्ष
  4. अमूर्त/औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था(**F**ormal **O**perational **S**tage) :12–15 वर्ष

  1. **<u>संवेदी/पेशीय/संवेदात्मक गामक अवस्था(Sensory Motor Stage)</u>** :–
     - यह ज्ञानात्मक/बौद्धिक विकास की प्रथम अवस्था है जो जन्म से 2 वर्ष तक चलती है।
     - इस अवस्था में शिशु अपनी संवेदनाओं को शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से व्यक्त करता है।
     - वह वस्तुओं को देखकर, सुनकर, स्पर्श करके, गंध के द्वारा तथा स्वाद के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है।
     - इस अवस्था में शिशु हाथ–पैर हिलाने लगता है तथा छोटे–छोटे शब्दों को बोलने लगता है।
     - संवेदात्मक गामक अवस्था के दौरान शिशु ⟶ गतिशील ⟶ अर्द्धभाषी तथा सामाजिक दृष्टि से चतुर व्यक्ति बन जाते है।
     - इस अवस्था में शिशु निम्न क्रियाऐं करता है :–
       1. आवाज एवं प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करते है।
       2. रूचिकर कार्यों को करने की कोशिश करते है।
       3. वस्तुस्थायित्व का ज्ञान इस अवस्था तक हो जाता है।
       4. 18 माह की आयु में बालक कुछ करने से पूर्व सोचना प्रारंभ कर देते है।
       5. प्रारंभ में भाषा का प्रयोग अनुकरण के लिए तथा बाद में अपनी अभिव्यक्ति के लिए करते है।

          इस अवस्था के पूर्ण विकास के बाद बालक संज्ञानात्मक विकास की दूसरी अवस्था में जाने को तैयार हो जाता है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

2. <u>पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage) :</u> यह अवस्था 2–7 वर्ष के बीच होता है।
   - अतार्किक चिंतन की अवस्था है।
   - इस अवस्था में ***शिशु दूसरों के संपर्क से, खिलौनों से तथा अनुकरण के माध्यम से सीखता*** है।
   - इस अवस्था में शिशु अक्षरों को लिखना, गिनती गिनना, रंगों को पहचानना, वस्तुओं को क्रम से रखना, हल्के भारी का ज्ञान होना तथा माता–पिता की आज्ञा मानना आदि सीख जाता है।
   - स्वयं से बातें करना (Collective Monologue)
   - इस अवस्था में उसमें तार्किक चिंतन करने योग्य नही होता है, इसलिए इसे **अतार्किक चिंतन की अवस्था** के नाम से भी जाना जाता है।

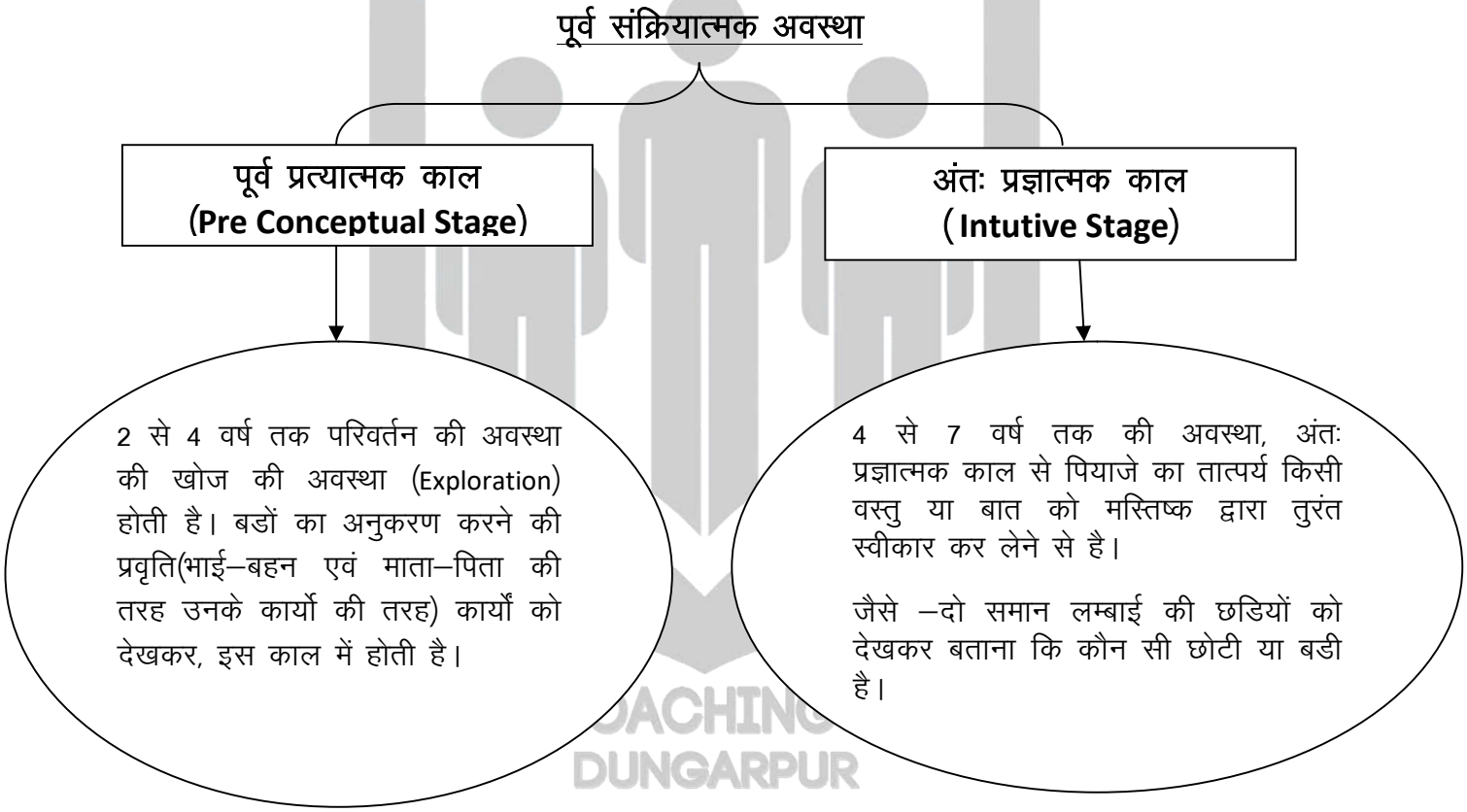

- <u>जीववाद (Animism)</u> :–जब एक छोटा बालक हर चलने वाली निर्जीव वस्तुओं को भी सजीव समझता है, उसे **जीववाद/एनीमिज्म** कहते है। जैसे –कार, पंखा, हवा, बादल आदि।
- <u>आत्मकेंन्द्रिता(Egocentrism):–</u> जब बालक संसार की सभी वस्तुओं का केन्द्र अपने आप को समझने लग जाता है। इसमें बालक सिर्फ अपने ही विचार को सही मानता

है। जैसे :– वह चलता है तो सूरज भी चलता है।, उसकी गुडिया वही देखती है जो वह देखता है।

- **पलावटी गुण :–** जब बालक दोनों तरफ के संबंध को समझ नही पाता उसे पलावटी गुण का अभाव कहते है।

  जैसे – अगर बच्चे को ये कहां जाये की तुम्हारे पापा को बुलाकर लाना तो वह बुलाकर ले आयेगा लेकिन अगर उसे ये कहा जाये की तुम्हारी मम्मी(राधा) के पति को बुलाकर लाना– तो बालक नही समझ पायेगा।

  जैसे –2x2 यानी 4 लेकिन 4 ÷ 2 यानी 2 यह कैसे हुआ नही समझता है।

3. **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage) :** यह अवस्था 7 से 11/12 वर्ष की होती है।
   - इस अवस्था में बालक तार्किक चिंतन करने योग्य हो जाता है, लेकिन उसका चिंतन केवल मूर्त/प्रत्यक्ष वस्तुओं तक ही सीमित रहता है। इसलिए इसे ''**मूर्त चिंतन**'' की अवस्था कहते है।
   - इस अवस्था में **पलावटी गुण** विकसित हो जाता है।
   - इस अवस्था में बालक उचित–अनुचित, अच्छा–बुरा आदि में अंतर करना सीख जाता है।
   - इस वैचारिक क्रिया की अवस्था भी कहा जाता है।
4. **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage) :** यह अवस्था 12 वर्ष से अधिक की होती है।
   - इस अवस्था में किशोर मूर्त के साथ–साथ अमूर्त चिंतन करने योग्य भी हो जाता है, इसलिए इसे ''**तार्किक चिंतन**'' की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।
   - इस अवस्था में किशोर तर्क–वितर्क करना, चिंतन करना, कल्पना करना, निरीक्षण करना, समस्या समाधान करना आदि पूरी तरह से सीख जाता है।
   - चिंतन में **वास्तविकता एवं वस्तुनिष्ठ** की भूमिका अधिक बढ जाती है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

जेरोम ब्रुनर के अनुसार संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत

- जेरोम ब्रुनर ने पियाजे के सिद्धांत की अपेक्षा अपने सिद्धांत को अधिक सिद्धांत को अधिक उन्नत बनाने की कोशिश की है। ब्रुनर ने मूलतः दो प्रश्नों के उत्तर ढूंढने में अधिक रूचि दिखाई है :–

1. शिशु किस ढंग से अपनी अनुभूतियों (Experiences)को मानसिक रूप से बताते है,
2. शैशवावस्था तथा बाल्यावस्था में बालकों का मानसिक चिंतन कैसे होता है?

इन प्रश्नों के उतर ब्रुनर ने अपने सिद्धांत में देने की कोशिश की है। ब्रुनर के अनुसार संज्ञानात्मक विकास को निम्नलिखित तीन अवस्थाओं में बांटा है :–

(1) **सक्रियता/क्रियात्मक अवस्था (Enactive Stage)** :–इस अवस्था में बालक वातावरण को क्रियाओं अथवा कार्यप्रणाली द्वारा समझने का प्रयास करता है। किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बालक उसे पकडता है, रगडता है, मोडता है, काटता है व छूता है। इस अवस्था में भाषा अथवा मानसिक प्रतिबिम्ब (Mental Images) का महत्व नही होता।

(2) **दृश्य प्रतिमा/प्रतिबिम्ब अवस्था (Iconic Stage)** :–इस अवस्था में मानसिक प्रतिबिम्बों के द्वारा सूचनाएं व्यक्ति तक पंहुचती है। बालक चमक, शोर, गति तथा विविधता से प्रभावित होता है। यह पियाजे के पूर्व संक्रियात्मक अवस्था से मिलती–जुलती अवस्था है। बालकों में दृश्य स्मृति(Visual Memory) विकसित हो जाता है।

(3) **संकेतात्मक अवस्था (Symbolic Stage)** :–इस अवस्था में बालक की क्रियात्मक तथा प्रत्यक्षीकृत समझ का प्रतिस्थापन संकेत प्रणाली में हो जाता है।

बालक भाषा, तर्क तथा गणित सीख लेते है और उनका प्रयोग करते है। संकेत विभिन्न वस्तुओं को समझने तथा कार्यों को करने का संक्षिप्त तरीका है। जटिल अनुभव तथा ज्ञान संक्षिप्त कथनों व सूत्रों के रूप में प्रस्तुत किए जाते है। सूचनाओं तथा ज्ञान को स्मरण करना तथा अन्यों तक पंहुचना सरल हो जाता है।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि बालक प्रारंभ में क्रियाओं के द्वारा, फिर मानसिक प्रतिबिम्बों के द्वारा तथा सबसे अंत में संकेतों व शब्दों का प्रयोग करके चिंतन करते है।

वाइगोत्सकी का संज्ञानात्मक विकास का सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांत

- मनोवैज्ञानिक वाइगोत्सकी के अनुसार पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के अपने सिद्धांत में बच्चों द्वारा वातावरण को स्वतंत्र रूप से खोजबीन करके संज्ञानात्मक विकास की प्रक्रिया पर बल डाला है। उसमें पियाजे ने परिपक्वता (Maturation)को भी महत्वपूर्ण माना था। परंतु सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ जिसके समर्थक लिव वाइगोत्सकी है, ने उसे स्वीकार नही किया है। इन्होनें बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक कारकों एवं भाषा को महत्वपूर्ण बतलाया। इसलिए वाइगोत्सकी के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत को ''**सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांत**'' **भी** कहा जाता है।
- पियाजे ने यह स्पष्ट किया था कि बच्चों के संज्ञानात्मक विकास मे संस्कृति तथा शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण नही होती है। वाईगोत्सकी ने इसे अस्वीकृत करते हुए

कहा है कि वास्तव में ऐसा नही है और बच्चे जिस उम्र में किसी संज्ञानात्मक कौशल को सीखते है, उन पर इस बात का अधिक प्रभाव पडता है कि क्या संस्कृति से उन्हें संगत सूचना तथा निर्देश प्राप्त हो रहा है या नही।

- वाइगोत्सकी ने यह बतलाया है कि सचमुच में संज्ञानात्मक विकास एक अंतवैयक्तिक सामाजिक परिस्थिति (Interpersonal Social Context) में संपन्न होता है, जिसमें बच्चों को अपने **वास्तविक विकास के स्तर(Level of Actual Development)** अर्थात् जहां तक वे बिना किसी मदद के अपने ही कोई कार्य कर सकते है, से अलग तथा उनके **संभाव्य विकास के स्तर(Level of Potential Development)** अर्थात् जिसे वे सार्थक एवं महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सहायता से प्राप्त करने में सक्षम है, के तरफ ले जाने की कोशिश की जाती है। इन दोनों स्तरों के बीच के अंतर को वाईगोत्सकी ने **समीपस्थ विकास के क्षैत्र(Zone of Proximal Development or ZPD)** कहा है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि समीपस्थ विकास का क्षैत्र से तात्पर्य बच्चों के लिए एक ऐसे कठिन कार्यों के परास से होता है, जिसे वह अकेले नही कर सकता है लेकिन अन्य वयस्कों तथा कुशल सहयोगियों की मदद से उसे करना संभव है।साम
- सामाजिक–सांस्कृतिक विकास मानसिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है और इनकी भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है –
  1. **आत्मसातीकरण का सिद्धांत(Theory of Internalisation):–** बालक परिवार समूह एवं समाज के सदस्यों के कार्यों एवं उनकी भाषा का अनुकरण करके उसे सीख लेता है। हिन्दी परिवार में जन्म लेने वाला बालक इसी सिद्धांत के तहत हिन्दी भाषा सीखता है।
  2. **समीपस्थ विकास का क्षैत्र (Zone of Proximal Development):**–बडों, अनुभवी व्यक्तियों के संपर्क से विकसित होने वाला क्षैत्र जैसे– 10 वर्षीय बालक जिसकी मानसिक आयु 10 वर्ष है बडों अथवा अनुभवी व्यक्ति के सहयोग से 12, अथवा 13 वर्ष की मानसिक क्षमता प्रदर्शित करने लगता है तो 2 या 3 वर्ष का यह अंतर समीपस्थ विकास का क्षैत्र माना जाता है।
  3. **ढांचा / पाड(Scaffolding):–** सीखने एवं समस्या समाधान में दिया गया अस्थायी सहयोग **स्कफोल्डिंग** माना जाता है। यह सहयोग पुनःस्मरण कराने एवं प्रशंसा करने के रूप में हो सकता है।

मनोसामाजिक विकास का सिद्धांत

एरिक एरिक्सन ने मनोसामाजिक विकास सिद्धांत का प्रतिपादन किया इनके अनुसार व्यक्ति के जीवन में कुछ कार्य निर्धारित होते है जिन्हें वह विभिन्न अवस्थाओं में पूर्ण करने का प्रयास करता है। प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति को सकारात्मक एवं नकारात्मक विकल्प के बीच संघर्ष का (विकासात्मक संकट) का सामना करता पडता है। एरिकसन ने मनोसामाजिक विकास की अवस्था को

आठ भागों में विभाजित किया है। जिसे एरिक्सन ने मानव की आठ आयु कहा है। मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाऐं निम्नलिखित है :–

1. **विश्वास बनाम अविश्वास(जन्म से 18 माह)/Trust Verses Mistrust** :– शिशु का पालन प्यार एवं विश्वास के माहौल में होने पर उसमें विश्वास का भाव उत्पन्न होता है। इसके अभाव में अविश्वास का भाव उत्पन्न होता है।
2. **स्वायतता बनाम शर्त एवं संदेह/Autonomy Verses Shame & Doubt (18 महीने से 3 वर्ष तक)** :–जब बालक की ऊर्जा का निर्देशन उसके शारीरिक विकास में उचित ढंग से किया जाता है तो उसमें स्वायतता का विकास होता है सही ढंग से निर्देशन न हो पाने पर बालक में शर्म एवं संदेह पैदा होता है।
3. **पहल बनाम अपराध/Initiative Verses Guilt (3 से 6 वर्ष तक)** :– इस अवस्था में बालक अधिक सशक्त ढंग से कार्यों में पहल करता है किंतु दबाव देने अथवा रोकने पर अपराध बोध विकसित कर लेता है।
4. **परिश्रम बनाम निकृष्टता/Industry verses Inferiority (6 से 12 वर्ष)** :– बालक नए कौशल एवं ज्ञान का विकास परिश्रमपूर्वक करता है। सफल न हो पाने पर निकृष्टता का भाव उत्पन्न हो जाता है।
5. **पहचान बनाम भूमिका/Identity verses Role Confusion (12 से 18 वर्ष)** :–स्वपहचान बनाने के लिए किशोर को विभिन्न भूमिकाओं को समन्वित करने की आवश्यकता होती है। ऐसा न कर पाने पर किशोर में भूमिका भ्रम उत्पन्न हो जाता है।
6. **घनिष्ठता बनाम अलगाव/Intimacy Verses Isolation (18 से 35 वर्ष)** :– युवा व्यक्ति दूसरों से घनिष्ठता संबंध बनाने का प्रयास करता है, ऐसा न कर पाने पर वह सामाजिक एवं संवेगात्मक दृष्टि से अलग थलग पड जाता है।
7. **उत्पादन शीलता बनाम गतिरोध/Generativity Verses Stagnation (35 से 65 वर्ष)**:– प्रौढावस्था के दौरान व्यक्ति युवा व्यक्तियों को सहयोग देने एवं निर्देश देने में सक्रिय ढंग से भूमिका निभाता है। ऐसा न करने पर उसके विकास में गतिरोध विकसित हो जाता है।
8. **आत्मनिष्ठा बनाम निराशा/Ego Integrity Verses Despair (55 वर्ष से मृत्यु तक)** :– जीवन के अंतिम वर्षों में व्यक्ति अपने आप प्रश्न पूछता है कि उसके जीवन का कुछ महत्व रहा? यदि उत्तर हां में होता है तो उसमें आत्मनिष्ठा का भाव उत्पन्न होता है तथा उत्तर नही में होने पर निराशा का भाव उत्पन्न हो जाता है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE BUNGAR-PUR

5. नैतिक विकास
(Moral Development)

- **सेमुअल स्माईल** :– ''चरित्र आदतों का पुंज है।''
- **डमविल** :– ''चरित्र उन सब प्रवृतियों का योग है, जो एक व्यक्ति में पायी जाती है।''
- **मैक्डूगल** :– ''चरित्र स्थायी भावों की एक व्यवस्था है।''
- **रॉस** :– ''संगठित आत्म ही वास्तव में चरित्र है।''

सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति समाज में प्रचलित आचरण के नैतिक मानदण्डों को अपने में समाहित करता है तथा सीखता है। व्यक्तिगत इच्छाओं तथा सामाजिक दायित्व के संघर्ष को किस प्रकार नियंत्रित किया जाए यही नैतिक विकास कहलाता है।

- **जीन पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत** :– जीन पियाजे ने नियमों, अधिकारों, दोषों, पापों व अत्याचारों के मूल्यांकन, समानता तथा पर–निर्भरता से संबंधित प्रश्न एवं कहानी के माध्यम से बच्चों के गहन साक्षात्कार किए। उन्होंने प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करके नैतिक विकास के चार मुख्य स्तर बताए है –

1. **अनामी चरण (Anomy Stage):– (प्रथम 05 वर्ष)** इस चरण में व्यवहार न नैतिक होता है और न ही अनैतिक। पीडा एवं हर्ष उसके व्यवहार को नियंत्रित करते है। यह प्राकृतिक परिणामों का अनुशासन है।
2. **अधिकार चरण (Heteronomy Stage):– (05 वर्ष से 08 वर्ष)** इसे कृत्रिम परिणामों के अनुशासन का नाम दिया जा सकता है। नैतिक विकास को बाह्य प्राधिकरण द्वारा नियंत्रित किया जाता है। पुरूस्कार एवं दण्ड नैतिक विकास को नियंत्रित करते है।
3. **अधिकार –पारस्परिक आदान प्रदान चरण (Heteronomy-Reciprocity Stage):– (8 से 13 वर्ष)** :–इस चरण में समान आयु या बराबर के साथ सहयोग की नैतिकता होती है अर्थात यह चरण पारस्परिक आदान प्रदान द्वारा नियंत्रित होता है। हमें दूसरे के साथ वह बर्ताव नही करना चाहिए जो हमारे लिए अपमानजनक हो।
4. **स्वायतता चरण (Autonomy Stage):– (13–18 वर्ष)** पियाजे ने इसे समता का चरण भी कहा है। इस चरण में व्यक्ति अपने व्यवहार के लिए पूर्णतः जिम्मेदार होता है। नैतिक व्यवहार को नियंत्रित करने वाले नियम व्यक्ति के भीतर से उत्पन्न होते है।
5.

पियाजे के विचार के महत्वपूर्ण संप्रत्यय :–

1. **आत्मकेन्द्रिता(EgoCentricity)**:– बालक को अपने स्वयं के मानक और क्रियाकलाप की परवाह होती है।
2. **समाजकेन्द्रिता (Social Centricity)**:– जैसे–जैसे बालक बडा होता है, समाज के मानकों को अपना लेता है।
3. **प्रतिफलात्मक न्याय (Retributive Justice)**:– बालक के द्वारा यह महसूस किया जाना कि अपराध करने पर दण्ड अवश्य दिया जाए।
4. **सामाजिक न्याय (Social Justice)**:– जब बालक बडा हो जाता है तो सामाजिक न्याय की धारणा को स्वीकार करता है अर्थात अपराधी को दण्ड केवल कानून तोडने के आधार पर ही नही बल्कि कानून तोडने के लिए बाध्य किए जाने पर भी दण्ड दिया जाए जैसा विचार रखने लगता है।

- **कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत :–** लोरेन्स कोहलबर्ग ने पियाजे के द्वारा प्रस्तुत नैतिक विकास से संबंधित विचारों को विस्तृत करके नैतिक विकास से संबंधित विचारों को विस्तृत करके तार्किक चिंतन के तीन स्तरों, जिनमें से प्रत्येक के कुछ सोपान है, के रूप में नैतिक विकास का सिद्धांत प्रस्तुत किया।

10 से 16 वर्ष की आयु के बालकों के सम्मुख कहानियों के रूप में नैतिक दुविधाओं/Moral Dilemmas को प्रस्तुत किया गया तथा इन दुविधाओं पर आधारित साक्षात्कार किए गए।

साक्षात्कार से प्राप्त सूचनाओं के विश्लेषण से कोहलबर्ग ने नैतिक विकास के तीन प्रमुख स्तर एवं छः सोपान बताए है –

1. **पूर्व–परम्परागत स्तर (Pre Conventional Level)**:– कोहलबर्ग ने **प्रारम्भिक बाल्यावस्था** को पूर्व परम्परागत स्तर का नाम दिया है।

इस अवस्था में बालक नैतिकता का अर्थ निरपेक्ष रूप से ग्रहण करते है अर्थात कोई बात या तो ठीक है अथवा गलत।

इस स्तर पर व्यवहार का नियंत्रण बाहर से किया जाता है।

इस अवस्था में नैतिक व्यवहार का प्रेरक भी बाह्य होता है। (प्रेरक में दण्ड से बचना एवं पुरूस्कार लेना शामिल होता है।)

इस स्तर की दो अवस्थाऐं है :–

(अ) आज्ञा व दण्ड की अवस्था (Punishment and Obedience Orientation):– (0 से 2 वर्ष) नैतिकता का पालन आज्ञा व दण्ड के आधार पर करता है। इस अवस्था में नैतिक व्यवहार का प्रेरक बाहय होता है। दण्ड से

बचना एवं पुरूस्कार प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य होता है। जैसे– जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(ब) सापेक्ष साधन उन्मुख/सरल अंहकार/व्यक्ति केन्द्रित/स्वकेन्द्रित की अवस्था (Instrumental relativity Orientation):– (3 से 6 वर्ष) इस अवस्था में बच्चा अपनी **आवश्यकताओं** के प्रति सचेत रहता है और दूसरों के अधिकारों को भी समझने लगता है। इसी धारणा से वह दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयास पर समझौता करने को तैयार हो जाता है। जैसे – तुम मेरी पीठ पर खुजली करों, मैं तुम्हारी पीठ पर करूंगा।

2. **परम्परागत स्तर (Conventional Level):–** इसमें माता–पिता द्वारा दिया जाने वाला नैतिकता संबंधी ज्ञान परिवर्तित होने लगता है। इस स्तर पर भी व्यक्ति के आचरण पर बाहरी नियंत्रण रहता है। यहां पर भी दूसरों के नियमों का पालन किया जाता है परंतु अभिप्रेरणा आंतरिक होती है। इस स्तर की दो अवस्थाऐं होती है –

(अ) प्रंशसा/परस्पर एकरूप की अवस्था (Interpersonal Orientation):– इस अवस्था में नैतिक व्यवहार वह माना जाता है। जो दूसरों को प्रसन्न करें और दूसरा द्वारा स्वीकृत हो। इस अवस्था में बच्चा दूसरों को प्रसन्न करने तथा प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा रखता है।

(ब) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान/अधिकार संरक्षण की अवस्था (Authority Maintaining Orientation):– कानून न्याय व कर्तव्यों पर आधारित होगी। समाज के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए नैतिकता का पालन करता है।

3. **उतर–परम्परागत स्तर (Post Conventional Level):–**कोहलबर्ग ने किशोरावस्था को उतर परम्परागत स्तर कहा है। इस अवस्था में आचरण का नियंत्रण आंतरिक हो जाता है। उसमें स्वनिर्धारित सिद्धांतों के प्रतिनिष्ठा तथा अनुसरण करने की भावना होती है।

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

(अ) सामाजिक–संपर्क की अवस्था (Social Contact Orientation):– (12 से 16 वर्ष) – सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने की आवश्यकता की अपेक्षा न्याय एवं वैधता का महत्व अधिक हो जाता है। कानून को बदला जा सकता है यदि वह बहु संख्या की इच्छा को व्यकत नही करता एवं सामाजिक हित के अनुकूल नही है।

इस अवस्था में यह स्वीकार किया जाने लगता है कि सामाजिक स्तर के भेदभाव के बिना सबके अधिकार समान है।

(ब) सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत की अवस्था (Universal Ethical Principles Orientation):– इस अवस्था या स्तर पर व्यक्ति उचित–अनुचित का निर्णय स्वनिर्धारित नैतिक सिंद्धांतों के आधार पर करता है, जो तार्किक व्यापकता, सार्वभौमिकता तथा एकरूपता से युक्त करते है। नैतिकता व्यक्ति के अंतःकरण की ओर उन्मुख हो जाती है।

- **नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :–**
  1. परिवार
  2. विद्यालय
  3. पडोसी
  4. धर्म का प्रभाव
  5. मित्र समूह
  6. संस्कृति
  7. समुदाय

FIRST STEP OF SUCCESS

6. संवेगात्मक विकास
(Emotional Development)

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में समय–समय पर क्रोध, भय हर्ष, घृणा, प्रेम, वासना आदि भावों का अनुभव करता है, **इन्हे संवेग कहते है।**

संवेगों के द्वारा कार्यो को करने की प्रेरणा शक्ति का संचार होता है।

संवेगों का संबंध व्यक्ति के जीवन के भावात्मक पक्ष से होता है। जैसे– सुखद वस्तु देखकर प्रसन्न होना, इच्छा के विपरीत कार्य होने पर क्रोधित होना, दूसरों को अभाव ग्रस्त देखकर दया आना इत्यादि।

संवेग अंग्रेजी के शब्द ''**Emotional**'' बना है। **Emotional**'' लैटिन भाषा के **Emovere** से बना है। जिसका अर्थ **Out** या **To move** अर्थात् भडक उठना/उतेजित होना/ उदीप्त होना है।

SUCCESS COACHING INSTITUTE
BUNGARPUR

- **क्रो एण्ड क्रो :–** ''संवेग भावात्मक अनुभूति है जो व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक उतेजना पूर्ण अवस्था तथा आंतरिक समायोजन के साथ जुडी होती है।''
- **वुडवर्थ :–**''संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।''
- **जे.एस.रॉस :–**''संवेग चेतना की अवस्था है, जिसमें भावात्मक तत्व की प्रधानता होती है।''
- **जरशील्ड :–** ''किसी आवेग के उत्पन्न होने, उत्तेजित हो जाने तथा भडक जाने की अवस्था संवेग कहलाती है।''

- **गेट्स** :–''संवेग वे घटनाऐ है जिन से मनुष्य अंशात या उतेजित हो जाता है।''
- **मैक्डूगल** :–''संवेग मूल प्रवृति का ह्रदय है।''

संवेगों की विशेषताऐं :–

1. संवेग तीव्र होते है।
2. सार्वभौमिक, व्यापकता (प्रत्येक व्यक्ति में पाये जाते है।)
3. शारीरिक व मानसिक स्थिति में परिवर्तन
4. सुखात्मक व दुखात्मक दोनों प्रकृति – प्रेम, आमोद, सुखदायक, क्रोध, दुखदायक
5. संवेगों का संबंध मूल प्रवृति से होता है।(मैक्डूगल ने 14 मूल प्रवृतियां व 14 ही संवेग बताये है।)
6. संवेग क्षणिक होते है।
7. संवेगों का संबंध भावनाओं से होता है।
8. संवेगेां में व्यक्तिगत विभिन्नता पायी जाती है।
9. संवेगों में स्थानांतरण का गुण पाया जाता है।
10. संवेगों की क्रियात्मक प्रवृति।

संवेगों के प्रकार :–

1. **रागात्मक/सकारात्मक** (Positive Emotions):–
   (अ) बडों के प्रति – भक्ति, श्रद्धा
   (ब) बराबर वालों के प्रति – प्रेम, मित्रता, आसक्ति
   (स) छोटों के प्रति – स्नेह, वात्सल्य, दया
2. **द्वेषात्मक/नकारात्मक (Negative Emotions)**:–
   (अ) बडों के प्रति – भय, घृणा
   (ब) बराबर वालों के प्रति – ईर्ष्या, क्रोध, जलन
   (स) छोटों के प्रति – अभिमान, गर्व
3. **नैसर्गिक** (Natural)–भय, घृणा
4. **अर्जित(Developed)**–ईर्ष्या , प्रेम, घृणा
   सुखद – स्नेह, प्रेम, मित्रता
   दुखद – भय, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या

विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक विकास :–

(अ) शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास –

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

प्रारम्भ में शिशु की संवेगात्मक प्रतिक्रियाएं उतेजना मात्र ही होती है किंतु धीरे–धीरे उनमें भय, हर्ष, क्रोध संवेगों का उदय होने लगता है।

1. शिशु जन्म के समय से ही संवेग की अभिव्यक्ति करता है। जैसे –रोना, चिल्लाना, हाथ–पैर पटकना।
2. संवेगात्मक व्यवहार अस्थिर होता है –रोता हुआ, बच्चा मिठाई प्राप्त करते ही प्रसन्न हो जाता है। धीरे–धीरे उसमें बढती उम्र के साथ स्थिरता आती है।
3. संवेग प्रारंभ में अस्पष्ट किंतु बाद में स्पष्ट होने लगते है।
   (हरलॉक– संवेगों की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है।)
4. **ब्रिजेज के अनुसार** –''दो वर्ष की आयु तक सभी प्रमुख संवेगों का विकास हो जाता है। जैसे –उतेजना, आनन्द एवं कष्ट तथा शैशवावस्था के अंत तक –क्रोध,घृणा, भय, स्नेह, उल्लास, ईर्ष्या का उदभव हो जाता है।
5. **फ्रायड के अनुसार** –''प्रारम्भ में स्वप्रेम/ नार्सीसिज्म(Narsissim) का भाव अधिक होता है।
6. **गेटस के अनुसार** –''बालक का संवेगात्मक व्यवहार उसके विकास के अन्य पहलूओं के अनुरूप होता है।''

   सबसे महत्वपूर्ण संवेग –भय, क्रोध, प्रेम (वाटसन ने माना है)

   संवेगों की हिंसात्मक अभिव्यक्ति –रोना, चिल्लाना, काट लेना।

(ब) बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास –

1. संवेग स्थिर व निश्चित हो जाते है। (बहाने बनाना, स्थायी भावों का विकास)
2. उस समय बालक पर शिक्षक व विद्यालय का सर्वाधिक प्रभाव पडता है।
3. उपनाम से पुकारना अच्छा नही लगता।
4. चूमा जाना पंसद नही होता।
5. जिज्ञासा की प्रबलता
6. संवेगों की उग्रता में कमी

(स) किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास –

1. संवेगों की चरमसीमा
2. अमूर्त संवेग
3. सर्वाधिक अस्थिर हो जाते है।
4. संवेगों में आंधी व तुफान की अवस्था – आत्महत्या, उतेजना की स्थिति।
5. प्रमुख संवेग – काम, भय, क्रोध , ईर्ष्या, प्रेम, दया आदि।
6. शारीरिक शक्ति का सर्वाधिक प्रभाव संवेगों पर पडता है।
7. भाव प्रधान जीवन–दया, प्रेम, क्रोध, सहानुभूति, सहयोग की प्रवृति प्रबल

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

8. विरोधी मनोदशा–समान परिस्थिति में अलग–2 समय पर अलग–2 संवेगात्मक स्थिति हो जाती है।
9. वीरपूजा–अपने आदर्श एवं रूचियों के अनुरूप हीरो–हीरोईन का चयन कर उनके आदर्शों एवं कार्यों का अनुकरण करते है।
10. स्वाभिमान की भावना– स्वाभिमान पर ठोस पंहुचने पर आत्महत्या या पलायन या हत्या जैसा कार्य कर डालते है।
11. **कॉल व ब्रुश** –''किशोरावस्था के आगमन का मुख्य लक्षण संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन है।''
12. **बी.एन.झा** – ''काम नामक संवेग किशोरावस्था पर असाधारण प्रभाव डालता है।''

FIRST STEP OF SUCCESS

संवेगों को प्रशिक्षित करने की विधियां :–

1. **दमन/Sublimation**–अवांछित संवेगों पर दण्ड, कठोर नियंत्रण का प्रयोग
2. **मानसिक व्यस्तता(अध्यवसाय/Industriousness)** –शारीरिक व मानसिक रूप से व्यस्त रखना।
3. **मार्गन्तीकरण** –संवेगों की प्रवृति व दिशा को बदल देना।
4. **रेचन(Catharsis) का अर्थ** :–संवेगों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अवसर देना

संवेगों के सिद्धांत :–

1. जेम्स लॉज का सिद्धांत :– पहले व्यवहार तथा उसके बाद संवेग की अनुभूति। जैसे– व्यक्ति भालू देखकर भाग जाता है।

2. **केनन बोर्ड का सिद्धांत** :–व्यवहार व अनुभूति दोनों साथ–साथ होते है।

3. **मौलिक संवेगों का सिद्धांत** :–वाटसन (तीन संवेग मौलिक है–भय, प्रेम, क्रोध)

4. **संवेगों का द्विकारक सिद्धांत** :–स्टेनले शेचटर के अनुसार संज्ञान व उतेजना दो कारक होते है।

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

नोट :–

- **स्पिटज के अनुसार** – ''संवेग जन्म से विद्यमान नही होते है। मानव व्यक्तित्व के किसी भी अंग के समान उनका विकास होता है।
- **ब्रिजेज** :– ''जन्म के समय केवल उतेजना होती है, दो वर्ष तक सभी संवेगों का विकास हो जाता है।''
- **संवेगों का नियंत्रण केन्द्र** – हाइपोथेलेमस ग्रंथि (परिधिय तंत्रिका तंत्र) संवेगों के नियमन में केन्द्रिय व स्वायत तंत्रिका तंत्र भूमिका निभाते है।

- **मस्तिष्क का बायां भाग – सकारात्मक संवेगों के लिए उतरदायी है।**
- **मस्तिष्क का दायां भाग – नकारात्मक संवेगों के लिए उतरदायी है।**
- **मैक्डूगल के अनुसार –**''संवेग मूल प्रवृति का ह्रदय है।''
- **कोल के अनुसार –**''संवेगात्मक परिपक्वता की प्रमुख कसौटी –तनाव सहन करने की योग्यता है।''
- 2 से 5 वर्ष में संवेग स्वाभाविक होते है।

संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :–

1. वंशानुक्रम 2. थकान 3.मानसिक योग्यता 4.स्वास्थ्य 5.परिवार का वातावरण 6. अभिभावक का दृष्टिकोण 7. सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति 8. सामाजिक स्वीकृति 9. विद्यालय

5. भाषा विकास

(Language Development)

हरलॉक के अनुसार –दूसरे के साथ संचार बनाने की क्षमता भाषा है। बोलना भाषा का एक भाग है। ध्वनि या उच्चारित शब्द का प्रयोग अर्थ को पंहुचाने हेतु होता है। प्रत्येक ध्वनि जो मानव द्वारा की जाती है स्पीच नही होती है।

स्पीच/कथन केवल अर्थ को पंहुचाने के लिए ही प्रयोग नही किए जाते बल्कि दूसरों में क्रिया को उत्पन्न करने के लिए संदेश को भी सुरक्षित रखते है।

भाषा के प्रकार :–

1. **वाचिक भाषा** –शब्दों, वाक्यों, वाणी के रूप में सूचना को व्यक्त करना।
2. **सांकेतिक भाषा** – संकेतों के माध्यम से व्यक्त करना।
3. **आलेखिय भाषा** – लिखकर विचारों को व्यक्त करना।

भाषा की संरचना :–

1. **ध्वनिग्राम** :–बोली जाने वाली भाषा की सबसे छोटी ईकाई या मनुष्य की ध्वनि के भिन्न–भिन्न रूप। जैसे – सन्नी देओल की आवाज।
2. **रूपाग्राम** :–जब ध्वनिग्राम आपस में संयोजित कर लिया जाता है। तो रूपाग्राम कहलाता है।
3. **वाक्य विन्यास** :– रूपाग्राम को संयोजित करके जटिल शब्द वाक्य बनाये जाते है। जैसे– सतही संरचना व गहरी संरचना।
4. **अर्थ विज्ञान** :– व्यक्ति रूपग्रामों व वाक्यों से अर्थ किस तरह निकालता है।

नोट :–

- **वायगोत्सकी** :– भाषा व चिंतन की उत्पति अलग–अलग होते है, यह विकास समान्तर व विभिन्न चरणों में होता है। **(भाषा विकास अवस्था –वायगोत्सकी)**
- **जीन पियाजे** :–चिंतन भाषा का निर्धारण नही करता परंतु इससे पहले उपस्थित होता है। भाषा चिंतन के वाहकों में से एक है भाषा की समझ के लिए चिंतन आवश्यक है। चिंतन व भाषा में निकटवर्ती संबंध है लेकिन भिन्न–भिन्न प्रणालियां है।

–:विभिन्न अवस्थाओं भाषा का विकास :–

1.शैशवावस्था (बोलने से पूर्व की स्थिति) में भाषा का विकास :–

1. रोना :– बालक भूख–प्यास, शोर, तीव्र प्रकाश/डर/थकान के कारण रोता है।

2. बकबकाना :– बकबकाना/अर्थहीन ध्वनि की अवस्था है।

⇨ बालक 3 महिने से प्रारंभ होकर 8 महिने में बकबकाना/अर्थहीन ध्वनि निकालता है। इन शब्दों को मुख्यतः कूकना/कबूतर की तरह बोलना कहते हे।

⇨ सबसे पहले स्वर ध्वनि –जैसे– अ, आ, इ, उ, ऊ इत्यादि
बाद में व्यंजन ध्वनि – मा, पा, बा इत्यादि।

⇨ यह अवस्था बालक के बोलने के अंगों पर निर्भर करती है।

3. शरीर की गति एवं हावभाव :– बोधगम्य भाषा से पहले बालक अपनी आवश्यकता अथवा इच्छा को प्रकट करने के लिए शारीरिक हावभाव प्रकट करता है। यदि भोजन गर्म या ज्यादा ठण्डा है तो वह सिर घुमा लेता है।

4. बोलना :– बोलने में बालक निम्न में निपुण होता है –

1. **लोगों की वाक् कुशलता की समझ**

2. शब्दावली बनाना

(1)**सामान्य शब्दावली**–संज्ञा, क्रिया, विशेषण, सर्वनाम।

(2) **विशेष शब्दावली** –

संख्यात्मक शब्दावली
रंग शब्दावली
मुद्रा शब्दावली
समय शब्दावली
शिष्टता संबंधी शब्दावली– Iam Sorry
अपभाषा शब्दावली
रहस्यमय गुढ शब्दावली – किशोरावस्था से पूर्व रहस्यमय शब्दावली का ज्ञान हो जाता है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
BUNGARPUR

3. वाक्य रचना :– प्रो. स्मिथ के अनुसार

वर्ष	1	2	3	4	5	6
शब्दों का ज्ञान	3	272	896	1540	2072	2565
	दूध कहने का अर्थ– मुझे दूध चाहिए।	पहले संज्ञा से संबंधित शब्द तथा बाद में क्रिया शब्दों का प्रयोग करता है।		बालक जटिल व मिश्रित वाक्यों का प्रयोग शुरू कर देता है।		वाक्य रचना करने में समर्थ

FIRST STEP OF SUCCESS

संज्ञानात्मक विकास अधिक होने के कारण लडकियां लडकों से वाक्य रचना में आगे होती है।

4. उच्चारण की शुद्धता :– बालक का उच्चारण 18 महीने से सुधरने लगता है। तीन वर्ष की अवस्था तक उच्चारण काफी हद तक सुधर जाता है। **किशोरावस्था तक उच्चारण का विकास पूर्ण हो चुका होता है। जिसे आसानी से बदला नही जा सकता।**

5. पढने एवं लिखने का विकास –बालक पहले पढना बाद में लिखना सीखता है।

2. <u>उतर बाल्यावस्था एवं किशोराववस्था में भाषा का विकास :–</u>

1. **जटिलताः–** इस अवस्था में बालक की भाषा जटिल हो जाती है। अपनी समस्या समाधान मे बालक भाषा का प्रयोग करता है।

2. **शब्दावली की अधिक संख्या :–**12 वर्ष की आयु तक बालक की शब्दावली 10000 शब्दों तक हो जाती है।

3. **लम्बे प्रतित्युतर** –बढती लम्बी उम्र के साथ बालक संज्ञा का प्रयोग कम तथा सर्वनाम , विशेषण एवं क्रिया का अधिक प्रयोग करता है।

4. **प्रश्नों की अधिकता** – क्यों?, कैसे? और कौन? से संबंधित प्रश्न

5. **विभिन्न क्षैत्रो में सुधार** –बालक के सुनने, बोलने एंव लिखने में सुधार आता है।

SUCCESS COACHING INSTITUTE
SUNGARH

<u>बोलने में होने वाली कठिनाईयां :–</u>

1. **तुतलाना/Lisping**– इसमें बालक अक्षरों, शब्दों का शुद्ध उच्चारण नही कर पाता। इसका कारण बचकाना बोली के कारण होता है।

2. **अस्पष्ट उच्चारण/Slurring** :–शब्दों को साथ बोलने के कारण यह समस्या उत्पन्न होती है। अत्यधिक डर के कारण संवेगात्मक तनाव अथवा अपरिचितों में अधिक समय रहने से या तो बच्चा चुप रहता है या अस्पष्ट उच्चारण करता है।

3. **हकलाना/Stuttering and Stammering** :–हकलाने/ **Stuttering** में बालक उन्ही शब्दों को बार–बार दोहराता है। जबकि **Stammering** में बालक कुछ समय तक शब्दों को उच्चारित ही नही कर पाता जिसके कारण उसके चेहरे एवं हावभाव में परेशानी दिखाई पडती है। इसके कारण संवेगात्मक परेशानी एवं सामाजिक समायोजन में कठिनाई होती है।

FIRST STEP OF SUCCESS

Stuttering सामान्यत 2–3 वर्ष के बालक मे पाई जाती है जो बढती उम्र के साथ ठीक हो जाती है। जबकि **Stammering** आगे की उम्र तक चलती है। कारण – संवेगात्मक कठिनाई, असफलता का डर, कुण्ठा, चिंता, असुरक्षा आदि एवं मस्तिष्क के दोनों भागों में संतुलन नही होना।

परिपक्वता, प्रशिक्षण एवं वातावरण प्रदान करने से समस्या दूर हो जाती है। बालको को बोलने में जल्दी करने से रोकना भी चाहिए।

नोम चौमस्की का भाषा विकास का सिद्धांत :–

नोम चौमस्की ने 1959 में स्किनर की पुस्तक ''**Verbal Behaviour**'' की समीक्षा की ओर इन्होने स्किनर के क्रियाप्रसुत व्यवहार सिद्धांत, जिसका उपयोग शाब्दिक व्यवहार या भाषा की व्याख्या में किया गया था।

भाषा विज्ञानी नोम चौमस्की के एक मनोभाषीय सिद्धांत का विकास किया जिसका आधार जैविक होता है। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में व्याकरण सीखने की एक जन्मजात क्षमता होती है। इनके अनुसार बच्चों में जन्मजात तंत्रिकीय(**Neurological Machanism**) जैसी अवस्था होती है। जिसके कारण वे वाक्य विन्यास (**Syntax**) को सीखते है। इस प्रक्रिया को **भाषा ग्रहण साधन (Language Aquisition Device-LAD) कहते है।**

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

चौमस्की ने अपने इस सिद्धांत में भाषा विकास के धनात्मक पहलू पर अधिक बल डाला है। भाषा विकास का यह पहलू बच्चे द्वारा वाक्य विन्यास के नियमों को सीखने की क्षमता पर आधारित होते है।

चौमस्की ने इस नियम को दो भागों मे बांटा है –

1. **सतही संरचना (Surface Structure)**– वाक्य के विभिन्न तत्व सतही संरचना से तात्पर्य संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि के ज्ञान से होता है। जो शाब्दिक अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है।

2. **गहरी संरचना (Surface Structure)**–वाक्य के अर्थ का निर्धारण गहरी संरचना से होता है। चौमस्की के अनुसार भाषा के समझने में सबसे महत्वपूर्ण समस्या वाक्य की सतही संरचना से गहरी संरचना के बारे में पता लगाने से होता है।

आलोचना :–चौमस्की सिद्धांत से यह पता नही चलता कि बच्चों की जन्मजात क्षमता से उनका क्या तात्पर्य है और इससे विभिन्न तरह के भाषा संबध व्यवहार की उत्पति कैसे होती है। चौमस्की का सिद्धांत इस प्रश्न का उतर देने में असमर्थ है कि बालक अपनी देशी भाषा को किस प्रकार सीख पाता है।

नोट : **भाषा का सापेक्षवादी सिंद्धांत** – व्हार्फ

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR